मनीपोतवाली

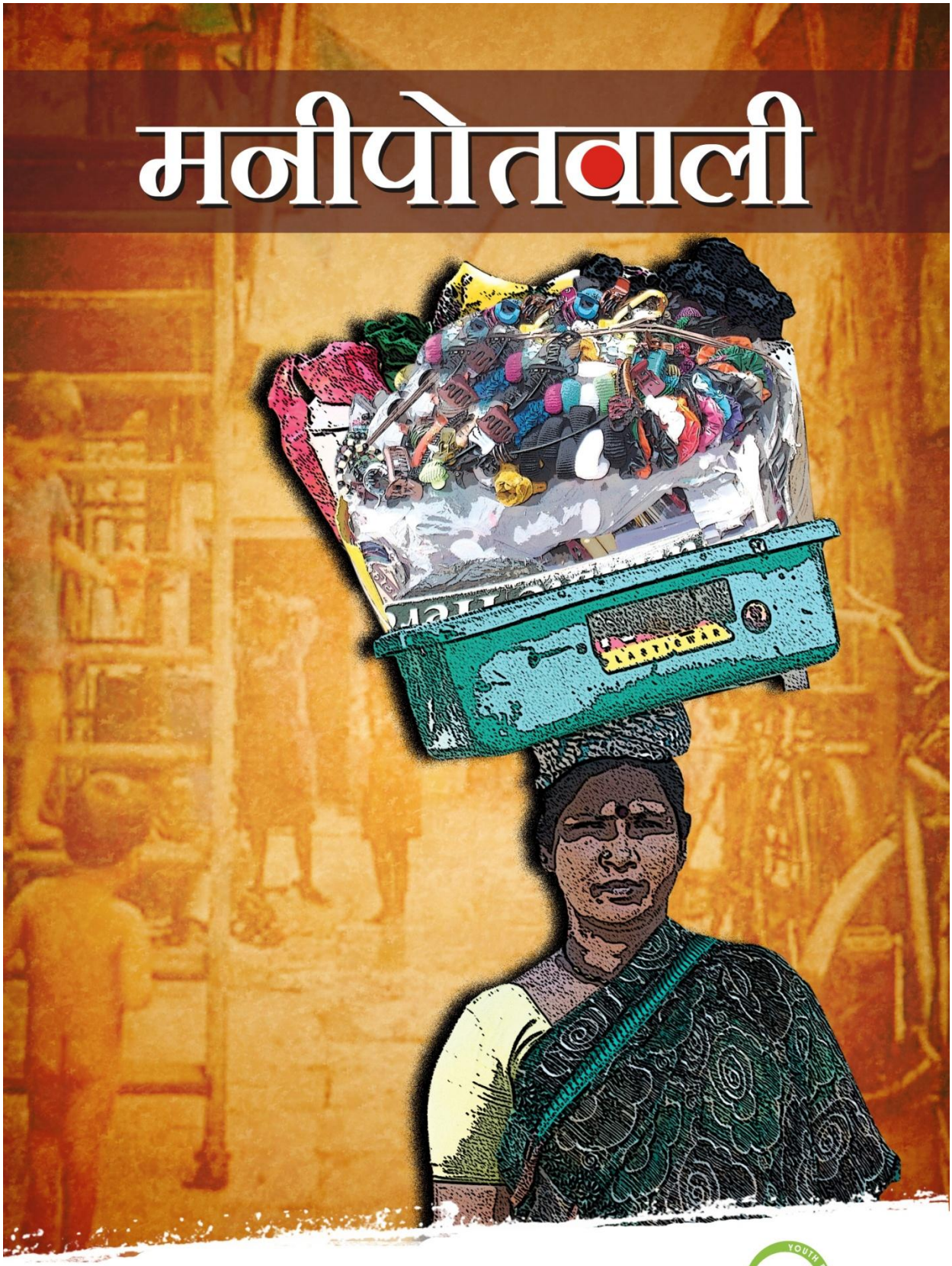

Research study conducted by youth group under PUKAR youth fellowship program 2012-2013.

मनीपोतवाली औरतोका व्यवसाय

२०१२-२०१३

कॅटलिस्ट: लक्ष्मी गुडील

सद्स्य:

१. योगिता शिर्के

२. सुनिता मेलकुंदी

३. माया जयस्वाल

४. रेश्मा शिर्के

५. सुमन शिरकूल

६. रेखा वरगंटी

७. काजल दासरी

८. दीपशिखा गुप्ता

कोर्डिनेटर: सुनील गंगावणे

युथ फ़ेलोशिप प्रोजेक्ट

पुकार

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पेज नंबर
१	प्रस्तावना	१-२
२	हमारा सफ़र	३-१९
३	रिर्सच मेथड्स	२०
४	औरतोकी कहानी	२१-२६
५	विश्लेषण	२७-४६
६	निष्कर्ष	४७-४८
७	हमारी सिख	४९-५०

धन्यवाद!

पुकार युथ फ़ेलोशिपके जरिये हमे हमारे बस्तिमे रेहनेवाली मनीपोतवाली औरतोका व्यवसाय, बचपन, जिंदगी, उम्मिदे और उनकी खुशियोके बारेमे जाननेका मौका मिला. हम सब उनके आभारी है। हम अपने परिवारके लोगोकोभी बहोत धन्यवाद देते है, उन्होने हमे पुरे साल यह काम करने के लिये टाईम और परमिशन दी। कमलेश शामंतुला, सारिका यादव और सुनिल वरगंटी इन्होने हम सारी लड्कियोको पुकार युथ फ़ेलोशिपसे जुडने के लिये प्रोत्साहन दिया, हम उनके हमेशा आभारी रहेंगे।

साथही हमारे कोर्डिनेटर सुनिल गंगावणे, उन्होने हमारे हर काममे मदद कि, रिसर्चके दौरान हमे बहुत कुछ सिखाया और प्रोत्साहन दिया, इसलिये हम उनका और पुकार युथ फ़ेलोशिप के टीमका दिलसे शुक्रियादा करते है।

... और सबसे जरुरी, जिनके बिना यह प्रोजेक्ट बन ही नही सकता था, वो है हमारी प्यारी मनीपोतवाली औरते! वो हमारी अम्मा, शिन्नामा, आत्ता, अव्वा, वद्न्या और अक्का है। उन्होने हमे, नाही अपना किमती समय दिया बल्कि अपनी जिंदगीकी कहानीभी बतायी, हम उनके आभार शब्दोमे नही बता सकते।

प्रस्तावना

कंगी, काजल, टिकली, मनीपोतवाली.....ऽऽ
कंगी, काजल, टिकली, मनीपोतवाली.....ऽऽ
सुई घे....., फनी घे.....ऽऽ

क्या आपने ऐसी आवाज सुनी हैं? शायद से आपके बचपन में ये आवाज सुनी होगी। ये आवाज सुनते ही दिमाग में एक औरत का चेहरा भी याद आता होगा..... जो औरते काजल, टिकली, पावडर, कंगी गले की माला ऐसी कितनी चीजें अपने सर पर से एक बडी सी पेटी लेकर गली-गली घुमा करती थी। दूर-दूर जगह पर पैदल जाती थी, लोगों को आवाज देकर बुलाती थी, कभी कभी अपने सर का बोजा आपके दरवाजे पर रखकर दो मिनट के आराम के लिए बैठ जाती थी, आपसे पानी माँगती थी...

यही औरते हैं मनीपोतवाली... इनकी जिंदगी मानो इसी काम में बीत रही हैं, इनका घर, संसार, परिवार इसी काम की वजह से चल रहा हैं। मुंबई के जोगेश्वरी इलाके में ऐसी कितनी मनीपोतवाली औरते रहती हैं। उनका काम, उनका परिवार और उनके जीवन को समझना बहुत जरूरी हैं।

हमने यह टॉपिक इसलिए चुना हैं, क्योंकि यह मनीपोतवाली औरते कोई और नहीं, हमारी माँए हैं। हम उनके बारे में जानते हैं। पर इतना नहीं जानते कि उनका बचपन कैसा था, उनकी जिंदगी कैसी थी, उन्होंने अपनी जिंदगी कैसी बिताई यह हमें पता नहीं। लेकिन आज जब हम उन्हें पुँछते हैं उन्हें उनकी जिंदगी के बारे में, तब उनके चेहरे पर एक अलग सी उदासी आ जाती हैं। वह कहती हैं कि उन्होंने अपनी जिंदगी में बहुत तकलीफें सहन की हैं। जब हम यह बातें सुनते हैं, तो हमें बहुत बुरा लगता हैं और हम उनके बारें में सोचने लगते हैं। और जब हमें पता चला कि वह मनीपोतवाली का काम बचपन से अभी तक करती आ रही हैं तो हमें लगा कि उनके जिंदगी के बारे में, उनके व्यवसाय के बारे में और उनके बचपन के बारे में लोगों को भी पता चलें

कि दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जो बहुत सी मुश्किलो कें बाद, बहुत सी परेशानीयों के बाद भी अपने बल पर जी रही हैं। अपने बच्चों को संभालना और अपने परिवार का पालन-पोषण कर रही हैं। यह सारी बाते लोगों तक पहुँचाने के लिए यह टॉपिक हमने चुना।

हमारा यह छोटासा रिसर्च इन सारी औरतों को और उनकी मेहनतवाली जिंदगी को आप सभी लोगों के सामने लाने की एक कोशिश हैं। जिन औरतों की जिंदगी की कहानी न किसी ने सुननी चाही और ना ही किसीने समझनी चाही, उन औरतों का यह रिसर्च।

हमारा सफर

हम सब हमेशा से साथ रहते थे। हम सब एकही बस्ती में रहते हैं और स्कूल जाना, खेलना-कूदना हो तो हम हमेशा से साथ में रहे हैं। फिर बाद में कमलेश सर, सुनिल वरगंटी ने हमें पुकार के बारे में बताया और समझाया कि पुकार एक ऐसी संस्था हैं जो हर साल लोगों (युथ) को रिसर्च करने का मौका देती हैं। भले वह कोई भी टॉपिक हैं, और साथ-साथ अलग-अलग वर्कशॉप भी होते हैं। जिससे हमें अलग-अलग जानकारी भी मिलेगी और नये लोगों से मिलने भी मिलेगा, नए दोस्त बनेंगे। फिर हम सब लडकियों ने सोचा, बहुत सोचा, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? और हमें ग्रुप भी बनाना था तो कौन हमारे साथ आयेगा। एक दिन हम सबने ग्रुप मिटींग लिया सुनिल वरगंटी के घर में, तो सुनिल ने हमें फॉर्म दिया (पुकार युथ फेलोशिप का), फॉर्म कैसे भरना हैं समझाया। फिर हमारा ग्रुप बना, हमारे ग्रुप में सुजाता, योगिता, काजल, सुनिता, रेखा, रेश्मा, लक्ष्मी, माया, दिपशिखा, दुर्गी। हमारा १० जण का ग्रुप बना। फिर हमें फॉर्म भरना था, हमारे पास एक ही दिन था, तो सुनिता ने पुरा फॉर्म भर दिया। फॉर्म में छोटे, बडे सवाल पुछे थे, उसके जवाब लिखने थे। सवाल बहुत सिंपल थे जैसे कि आपका ग्रुप कैसे बना, आप एक-दूसरे को कब से जानते हो, आप रिसर्च क्यो करना चाहते हो, क्यो? ऐसे। फॉर्म भरने के बाद हमें इंटरव्हयू के लिये जाना था, पर हमारा इंटरव्हयू बहुत लेट हुआ। हमारा इंटरव्हयू था, हम गोवंडी टाटा गये थे। हमें समझ में नहीं आ रहा था कि, इंटरव्हयू में क्या होगा, हम इंटरव्हयू के लिए कमलेश सर के साथ गए थे। वहाँ पर अलग-अलग सवाल पुछे गये, जैसे कि आप ग्रुप में कब से हो, आप रिसर्च क्यों करना चाहते हो, आपने यह टॉपिक क्यों चुना। यह सब सवाल पुछे और हमने सभी सवाल के जवाब अच्छे से दिये। फिर हम सब बहुत खुश थे, हमें पहले-पहले कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि हमें कैसे कैसे सवाल पुछेंगे, क्या होगा, हम कैसे बोलेंगे। डर लग रहा था, हमने कभी भी इंटरव्हयू नहीं दिया था, हमारा फर्स्ट टाईम था इंटरव्हयू देने का।

जब हमनें इंटरव्हयू दिया तो हमे ज्यादा डर नहीं लगा, हम सभी अच्छे से बोलने लगे। जब हमारा इंटरव्हयू हो गया तो सभी बहुत खुश थे। हमें पुरा विश्वास था कि हमारा सिलेक्शन होगा। कुछ दिन बाद हमें पता चला कि हम सिलेक्ट हो गये तो हम ज्यादा खुश हुए। खुशी तो

बहुत थी लेकिन अब आगे क्या होगा इस बारे में उत्सुकता भी थी। दिमाग में नये नये विचार और दिल में खुशी ही खुशी थी।

- ओरिएन्टेशन वर्कशॉप

हमने पहले से अब तक का वर्कशॉप अटेंड किया। इतने सारे वर्कशॉप हुए। जैसे मॅपिंग, फोटोग्राफी, आर.टी.आय. टेंडर, आय.सी.टी. ॲनॅलिस ऐसे अलग-अलग से वर्कशॉप होते थे। कभी जे.जे. नर्सिंग होम में, कभी गोरेगाव तो कभी खारघर में और बांद्रा में पुकार ऑफिस में। हमारा पहला वर्कशॉप ओरिएन्टेशन का था। जो जे.जे. नर्सिंग होम में था। उस वर्कशॉप में हमारे ग्रुप से २ लोग गये थे माया और रेश्मा। उस समय हमें कुछ पता नहीं था, हम डरते थे। लेकिन तभी भी हम दोनों अकेले ही वर्कशॉप के लिए गये। हमें जाते समय मुश्किले भी आयी, लेकिन फिर भी हम अच्छे से पहुँच गये। हम सभी ग्रुप के लोगों से मिले, सबसे बातें की। फिर हमारा वर्कशॉप शुरू किया। पहले ॲक्टीव्हिटी, फिर एक-दुसरे के बारें में जाना। हमें सिखाने के लिए बहुत से लोग थे, जो हमें जानकारी दे रहे थे। राजेंद्र, पुनम, सुनिल, जया, रोहन यह सभी लोग थे। हमें पहले राजेंद्र सर ने ओरिएन्टेशन के बारें में बताया, फिर पुनमजी ने हमें बहुतसी अच्छी

जानकारी दी। उन सभी से मिलकर हमें बहुत अच्छा लगा। वह सभी अच्छे लोग हैं। उनके पास बहुत जानकारियाँ थी जो उन्होंने हमारे साथ शेअर की। बहुत से गेम्स थे, उनके साथ हमें बहुत कुछ सिखने को मिला।

पहले वर्कशॉप में हमें गेम के द्वारा कुछ सिखने को मिला। उन्होंने हमें हमारे जीवन में कौन-कौन से मोड आये इसके बारें में draw करना था, जो हमने उन्हें लाईफ ऑफ रिव्हर के द्वारा बताया। हमने बहुत मस्ती भी की, उसके साथ-साथ हमें बहुत जानकारी भी ली। हमने वहाँ पर पुकार क्या है उसके बारें में जाना।

- **फोटोग्राफी**

हमारा जब फोटोग्राफी का वर्कशॉप था, तो बहुत सोच रहे थे कि फोटोग्राफी में क्या सिखायेंगे? हमें लगा कि फोटो नहीं निकालना सिखायेंगे। लेकिन जब हम फोटोग्राफी वर्कशॉप में गये तो हमें कुछ अलग ही लगा। हमें तो लगा था कि फोटो ही निकालना हैं। बस तो हमें बहुत अच्छे से सिखा रहे थे, हमें सिखानेवाले किरण थे, उन्होंने हमें बहुत डीपली बताया। जैसे की कॅमेरा रील, फ्लॅश लाईट, लेन्स, मेमरी कार्ड, कॅमेरा बॅटरी, ट्रायपॉड, फिलररर्स। यह सब क्या होता हैं, इसे कैसे इस्तेमाल किया जाता हैं यह सब जानकारी मिली। हमें बहुत खुशी हुई की इन सबका ऐसा युज होता हैं, हम भी युज कर सकते हैं। और उन्होंने हमें लेन्स के बारे में बताया कि कैसे कैसे लेन्स होते हैं। झूम लेन्स, फिशेज लेन्स, पर्सपेक्टीव्ह लेन्स, मॅक्रो लेन्स इस तरह कॅमेरा के चार लेन्स होते हैं। किरण सर ने और एक बात कहीं थी की हम फोटो कैसे निकालते हैं? और क्यों निकालते हैं? तो उन्होंने बोला कि फोटो ताजा रखने के लिए और कहानी बाते बताने के लिए।

जब फोटो निकालते हैं तो उसमें तीन चीजें होती हैं। १) ऑब्जेक्टीव्ह, २) बॅकग्राऊंड, ३) फॉरग्राऊंड। और हमें मोड ऑफ एक्सपोजर के बारे में बताया - १) ऑटो मोड, २) प्रोग्राम मोड, ३) ॲपरटेव्ह प्रायोरीटी मोड, ४) शटर प्रायोरीटी मोड, ५) मॅन्युअल मोड इसतरह पाँच मोड के बारे में बताया और कॅमेरे के अंदर मेनू होता हैं। वह भी हमें सिखाया और कैमेरा का युज कैसे करना हैं यह भी हमें सिखाया।

- **मॅपिंग वर्कशॉप**

पुकार में जुडने के बाद मैं बहुत सारे वर्कशॉप में गई, जैसे कि केस स्टडी, आर.टी.आय. मॅप और बहुत सारे वर्कशॉप में गई। सभी डब्ल्यू.एस. से मुझे बहुत कुछ सिखने को मिला जो कुछ मुझे नहीं पता था, वह सभी बातें मुझे पता चली। इन सबसे ज्यादा मुझे मॅप डब्ल्यू.एस. अच्छा लगा। मॅप क्या हैं? कैसे बनता हैं? क्या बनाया जाता हैं? उन सबके बारें में उन्होंने हमें अच्छे से समझाया। मॅप के कितने प्रकार होते हैं यह भी बताया और इस मॅप डब्ल्यू.एस. का युज हम रिसर्च में कैसे कर सकते हैं यह भी उन्होंने हमें बताया। हमें भी मॅप बनाने के लिए कहा और सूची भी बनाना सिखाया। हम सभी ने पुकार के ऑफिस का मॅप बनाया। मैने पहली बार मॅप बनाया अच्छा अनुभव था। मजा भी आया और बहुत अच्छा लगा।

- **इंटरव्हयू स्किल्स**

जब हमारा इंटरव्हयू का सेशन हो रहा था, तब मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। उनका बताने का, सिखाने का और किस तरह इंटरव्हयू लेना चाहिए और जब मैं सेशन के दौरान अपना इंटरव्हयू दे रही थी तो मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। बल्की मैंने पहली बार सबके साथ बोला और आत्मविश्वास के साथ सबके साथ बात कर रही थी। और मुझे बोलते वक्त मेरी सारी बातें मुझे याद आ रही थी और मुझे पहले की बाते और मेरे साथ क्या-क्या हुआ वो सारी बातें याद आ रही थी। फिर मैंने इंटरव्हयू अच्छे से दिया, मैंने इंटरव्हयू सेशन में बहुत कुछ सिखा और मुझे और मेरे ग्रुप के सभी सदस्यों को फायदा हो रहा हैं। क्योंकि हमारे रिसर्च के दौरान हमें इंटरव्हयू

लेना पडेगा, इसलिए हमें इंटरव्हयू के सेशन से फायदा हो रहा हैं। मुझे इतना फायदा हो रहा हैं कि अब मैं कभी भी और किसी की भी सामने बोल सकती हूँ।

- **आय.सी.टी**.

एक जो वर्कशॉप हैं आय.सी.टी., हमारे ग्रुप से दो लोग ही जाते थे। आय.सी.टी. वर्कशॉप हर शनिवार होता हैं। इसका युज हमारे भविष्य में बहुत काम आयेगा। आय.सी.टी. वर्कशॉप हमारा मिथुन और पुनम दिदी लेते हैं, तो हमें आय.सी.टी. में जी-मेल, ब्लॉग, फेसबुक यह सब आय. सी.टी. में सिखा।

हमारे सण्डे के जो वर्कशॉप रहते थे, उसमें हम बोलने लगे। मैं बोलने से डरती थी, इन वर्कशॉप से मेरा सेल्फ कॉन्फीडेन्स बढा, हमारा जनरल knowledge बढा। हमारा जब ॲनेलिसीस का वर्कशॉप हुआ तो हमने बहुत मेहनत की। हमें बहुत अच्छा लगा। ॲनेलिसीस करने और हमने जो आय.सी.टी. सिखा था, तो उसका युज अच्छा हुआ। हमारे ग्रुप को पुकार ऑफिस में पी.पी. टी. तैयार करना था तो हमें आय.सी.टी. वर्कशॉप से पी.पी.टी. बना पाएँ।

- **ग्रुप मिटींग**

हमारा ग्रुप का मिटींग बहुत मुश्किल से होता हैं क्योंकि हम लोग पुरा दिन घर से बाहर रहते क्योंकि कोई कोई job पे जाता हैं तो कोई कोई कॉलेज में जाता हैं। तो हमें मुश्किल होती थी मिटींग लेने में, तो हमने डिसाईड किया कि हम शाम को ८.०० बजे किसी के घर में मिलेंगे और वहाँ पर मिटींग लेंगे। तभी भी थोडी मुश्किल होती थी क्योंकि कोई कोई शाम का खाना बनाने में बिझी होते थे, तो कभी कोई टयुशन लेने में, इससे प्रॉब्लेम होती थी मिटींग लेने में। फिर हम लोगों ने हमारे पर्सनल चीजों को एक साईड रखके मिटींग लेना जरूरी समझा, तो सबको समझना पडा कि यह बहुत इंपॉरटन्ट हैं तो इसलिए सबने डिसाईड किया कि अबसे अपने पर्सनल चीजों को एक साईड रखके यह काम करना जरूरी हैं तो हमने मिटींग लेना शुरू किया।

मिटींग में बहुत प्रॉब्लेम होती थी क्योंकि कोई किसी की बात सुनने के लिए राजी ही नहीं होता था, सब अपना बोलने में ही लगे रहते थे तो इससे बहुत झगडा होता था। हमारा एक दिन भी ऐसा नहीं था कि जिस दिन झगडा नहीं होता था, इसके कारण बहुत मुश्किल होने लगी। इसके

कारण हमारी कॅटॅलिस्ट लक्ष्मी ने तो डिसाईड कर लिया था कि वह इस ग्रुप के साथ काम नहीं करेंगी तो इसमें बहुत झगडा हुआ। तो सब कहने लगे कि हम भी नहीं करेंगे इस ग्रुप में काम। इससे बहुत ज्यादा मुश्किल हो रही थी। हम लोगों को कमलेश सर, सारिका दिदी और सुनिल वरगंटी इस सबने समझाया कि ग्रुप ऐसे नहीं छोडते। तुम लोगों को काम करना पडेगा, उन्होंने हमें बहुत कुछ समझाया तो बहुत मुश्किल से सबने माना कि हम यह काम करेंगे तो धीरे-धीरे हमने अपना ग्रुप अच्छे से शुरू किया। जो वर्कशॉप जाकर आते थे, उन्होंने हमें आकर समझाया कि वहाँ क्या हुआ, क्या सिखा, किन्होंने हमें समझाया, किस टॉपिक पर बात हुई थी, सब हमें समझाते थे। तो धीरे-धीरे सब अच्छा होता गया, हम अच्छे से टाईम देने लगे, अब मिटींग में हम लोग बहुत मस्ती भी करते हैं, हँसते भी हैं, कोई कोई तो बहुत गुस्सा भी होता हैं और हमारा एक भी दिन ऐसा नहीं हैं कि झगडा नहीं होता। पर सब लोग मिलकर समझाते हैं तो वह समझ जाते हैं। हमारी कॅटॅलिस्ट लक्ष्मी वह सबको काम बाँट कर देती थी, तो सब वह काम करके आते थे। जो करके नहीं आता तो उसे हमारी कॅटॅलिस्ट लक्ष्मी बहुत डाँटती थी। तो वह बराबर से काम करके आते थे। इस तरह हमारा ग्रुप मिटींग होता हैं।

हमारे ग्रुप में झगडा हैं, डाँट हैं, गुस्सा हैं लेकिन हम जब काम करने के लिए एक साथ आते हैं तो किसी की नहीं सुनते हैं। मस्ती, मजाक और बहुत सारा काम करते हैं।

- **कॉर्डीनेटर के साथ मिटींग**

जब हम पुकार में इंटरव्हयू के लिए गये और पास हो गये तो हम बहुत खुश हुए कि अब हम कोई और काम करेंगे। और फिर हमें कॉल आया कि हमारी कॉर्डीनेटर पुनम हैं तो हम लोग बहुत खुश हो गये कि पुनम दिदी हमारी कॉर्डीनेटर हैं पर थोडा डर लग रहा था। हमने कुछ गलती की तो दिदी गुस्सा हो जायेगी। फिर हम लोगों को पता चला कि पुनम दिदी हमारी कॉर्डीनेटर नहीं हैं। वह थोडे दिनों के लिए छुट्टी ले रही हैं, पर दिदी के साथ हमारी मिटींग नहीं हुई थी। फिर हमें पता चला कि राजेंद्र सर हमारे कॉर्डीनेटर है तो हम लोग डर गये क्योंकि उनसे पहले कभी बात नहीं हुई थी और वह थोडे गुस्सेवाले लगते थे। फिर राजेंद्र सर के साथ हमारी मिटींग की तारीख फिक्स की और हम लोग बहुत डरे हुए थे कि पहली मिटींग कैसे होगी? फिर

वह मिटींग कॅन्सल हो गयी। उन्होंने कहा कि आपका कॉर्डीनेटर बदलनेवाला हैं। फिर तिसरे सुनिल हमारे कॉर्डीनेटर हैं। हमें पता चला तो हम बहुत खुश हो गये।

हमारे पहली मिटींग सुनिल सर के साथ हमारे ग्रुप की मेंबर रेश्मा के घर हुई थी। उस मिटींग में सुनिल से मुलाकात हुई और उनसे पहचान हुई और उस मिटींग में ही हमारा टॉपिक फिक्स हुआ। उस मिटींग में हमने सवाल पुछना सीखा। उस मिटींग में बहुत अडचण आ रही थी जैसे कि ग्रुप के मेंबर्स सब साथ में बात करते थे और प्रॉब्लेम यह हो रहा था कि हमारा टॉपिक क्या रखे यह सोच रहे थे।

हमारी दुसरी मिटींग सुनिल सर के साथ गोरेगाव में हुई, वहाँ पर सारे ग्रुप्स के मेंबर्स थे और वहाँ पर यह प्रॉब्लेम्स आ रहे थे कि कोई सवाल का उत्तर देना हो तो हमारे ग्रुप में सारे मेंबर बोल रहे थे कि तू बोल, तू बोल। और कोई टॉपिक को लेकर कितना सवाल आते हैं।

तिसरी मिटींग हमारी सुनिल सर के साथ बांद्रा में पुकार ऑफिस में थी। उस मिटींग में हमने रिसर्च क्यों करना चाहिए, रिसर्च से क्या होता हैं यह सारी बाते सिखी। हमारा ग्रुप का आत्मविश्वास बढ गया हैं और अब हमने सवाल पुछना सिखा हैं और बहुत सारे दोस्त बनाना सिखा।

कोऑर्डीनेटर के साथ मिटींग में बोलना सीखा, खुद पर आत्मविश्वास कैसे करते हैं, रिसर्च कैसे करते हैं और मैने डर से जितना सीखा। एक-दुसरे से कैसे बात करते हैं, दोस्त बनाना सीखा और खुद को कैसे प्रेझेंट करना है यह सारी बातें मिटींग में सीखी।

इस मिटींग में मैं सुनिल सर जैसे कोऑर्डीनेटर से मिली और पुनम दिदी, मिथुन जैसे लोग मिले। सुनिल सर से मुझे कैसे काम करना है यह दिशा मिली। पुनम दिदी, मिथुन जैसे लोगों से आय.सी.टी. वर्कशॉप में बहुत सारी बातें और कम्प्युटर के बारें में सीखा। यह सारी बातों से मेरा फायदा हुआ।

- **टॉपिक कैसे चुना?**

जब हमारा सिलेक्शन हुआ तो उसके कुछ दिन बाद से हम लोग टॉपिक चुनना शुरू कर दिया। हम लोगों के ग्रुप में बहुत प्रॉब्लेम आ रहा था। टॉपिक डिसाईड करने के लिए टॉपिक को लेकर हमारे ग्रुप में झगडा चालू हो गया था। हमारे मन में बहुत से टॉपिक आ रहे थे। लेकिन हम लोग उसे डिसाईड नहीं कर पा रहे थे। हम लोगों ने सोचा चलो हम सब एक दिन मिटींग रखते हैं

। फिर हम लोगों ने रेश्मा के घर में मिटींग रखा। लेकिन तब भी बहुत प्रॉब्लेम आ रहा था। सब लोगों ने एक-एक करके अपना टॉपिक बताया लेकिन तब भी समझ में नहीं आ रहा था कि कौनसा टॉपिक ले। टॉपिक को लेकर हमारे ग्रुप में झगडे भी होने लगे। उसके पहले हम लोगों को मिटींग के लिए बुलाया गया, बांद्रा में। फिर वहाँ पर हम सभी ग्रुप के को-ऑर्डीनेटर कौन हैं, यह बताया गया। पहले तो हमारी को-ऑर्डीनेटर पुनम दिदी बनी और दुसरी बार राजेंद्र सर बने, लेकिन बाद में सुनिल सर बने। फिर भी हम लोगों का टॉपिक डिसाईड नहीं हो पा रहा था। फिर हम लोगों का वर्कशॉप था जे.जे. नर्सिंग होम में। तो हमारे ग्रुप में से सिर्फ दो लोग गए। तभी हमारा टॉपिक नहीं डिसाईड हुआ था। जब मैं और रेश्मा वर्कशॉप के लिए गए थे तो वहाँ पर जो अलग-अलग गुप के लोग आये थे। सब लोगों का टॉपिक डिसाईड हो चुका था, पर हमारा नहीं हुआ था। फिर मैं और रेश्मा थोडे से डर गये थे और सोच रहे थे कि जब कोई हमारा टॉपिक हमसे पुछेगा तो हम क्या बोलेंगे? क्योंकि सबका टॉपिक चुनकर हो गया था। लेकिन हमारा नहीं हुआ था। फिर जब हम लोग ३ दिन का वर्कशॉप अटेंड करके घर आये, उसके दुसरे ही दिन हमने मिटींग लिया। रेखा के घर पर तभी भी हमने सब एक बार फिर से अपना-अपना टॉपिक सामने रखा। किसी ने कहा कि नगरपालिका के क्या काम हैं, किसी ने लडको-लडकियों में भेदभाव, किसी ने स्वच्छता के प्रति काम ऐसे टॉपिक सोच रहे थे। लेकिन हम लोगों के समझ में नहीं आ रहा था कि कौन-सा चुने। फिर तभी हमारे ग्रुप में बहुत झगडा होने लगा। झगडा करते-करते सब लोग अपने-अपने पर्सनल लाईफ को लेकर झगडा करने लगे। तभी हमारे ग्रुप से हमारी कॅटॅलिस्ट बाहर हो गई। फिर हमने कई दिनों बाद मिटींग रखा रेखा के घर में। तब हमने कमलेश सर को बुलाया, फिर सब लोगों ने अपनी-अपनी बाते रखी। फिर कमलेश सर ने समझाया, फिर से लक्ष्मी ग्रुप में जॉईन हो गई। तभी भी हमारा टॉपिक डिसाईड नहीं हो पाया था।

फिर हमें पता चला कि हमारा को-ऑर्डिनेटर सुनिल सर हैं तो उन्होंने कहा कि हम लोग मिटींग रखते हैं। फिर हमने सर को फोन करके कहा कि सण्डे को रेश्मा के घर में मिटींग हैं। फिर सुनिल सर आये और मिटींग हुआ। तभी सर ने कहा कि तुम्हारे ग्रुप में कितने लोग हैं। हमने कहा कि ९ लोग हैं। फिर सर ने सबसे पुछा कि अपना-अपना टॉपिक बताओ तो सबने अपना टॉपिक बताया। तो फिर हमने उसमें से एक टॉपिक चुना - लडको और लडकियों में भेदभाव। फिर सर ने पुछा कि तुम्हारे मम्मी-पापा क्या करते हैं? हमारे ग्रुप में से ७ लोगों ने कहा

कि हमारी मम्मी पेटी का माल बेचती हैं। पापा डब्बा ढाकन का काम करते हैं। और दिपशिखा ने कहा कि उसकी माँ टेलर हैं और माया ने कहा कि उसकी माँ हाऊस वाईफ हैं। फिर सर ने पुछा कि यह काम कैसे करते हैं? उसे क्या बोलते हैं? फिर सब लोगों ने कहा कि मनीपोत का काम कहते हैं। फिर सर ने बोला कि इससे क्या उनको फायदा होता हैं? तो सब लोगों ने कहा कि नही, बहुत प्रॉब्लेम होता हैं, उनकी मम्मीओं को। तो सर ने बोला कि फिर इसी टॉपिक पर तुम लोग रिसर्च क्यों नहीं करते? सबसे अच्छा टॉपिक हैं यह मुंबई में रहनेवाली मनीपोत औरतों का व्यवसाय। तभी हम लोगों ने यह टॉपिक चुना। फिर सब लोग खुश हो गये, सबने कहा अच्छा हैं। हम सब अपनी माँ का ही इंटरव्हयू लेंगे और रिसर्च करेंगे। तब जाकर हमारा टॉपिक डिसाईड हुआ

डाटा कलेक्शन

डाटा कलेक्शन हमने दो महिनों से करना शुरू किया। हमारा टॉपिक था मुंबई में रहनेवाली मनीपोतवाली औरतों का व्यवसाय। हमनें हमारे एरिया में रहने वाली औरतों का इंटरव्हयू लेना शुरू किया। हमने अलग-अलग ग्रुप बनाया, एक ग्रुप में ३ जन। हमनें इंटरव्हयू लेने का टाईम डिसाईड किया। क्योंकि उन औरतों को सुबह समय नहीं था, वह सुबह घर का सारा काम करती थी और सुबह ११.०० बजे काम के लिये घर से निकल जाती थी। फिर वह रात को ७-८ बजे आती और वह थकी हुई होती हैं। इसलिए हमने इंटरव्हयू का समय ८.३० से ९.०० रखा। हम लोग इंटरव्हयू के लिए उनके पास जाते और कहते हम आपका इंटरव्हयू लेना चाहते हैं तो कहती इससे हमारा क्या फायदा होगा, हमें क्या मिलेगा। इस तरह से सवाल हम सभी ने पुछे और उन्हे लगता कि इससे हमें कुछ फायदा होनेवाला हैं। लेकिन हमने उन्हें समझाया कि तुम्हें कोई फायदा या कुछ नहीं मिलेगा। हमने कहा कि हम मुंबई में रहनेवाली मनीपोतवाली औरतों के व्यवसाय के बारे में जानना चाहते हैं। आप लोग यह व्यवसाय करते हैं, हम आपके बचपन, जिंदगी और व्यवसाय के बारें में जानना चाहते हैं। और हम आपकी सारी बातें एक किताब में लिखनेवाले हैं। तो वह लोग हमें इंटरव्हयू देने के लिए तैयार हो गये।

हमने इंटरव्हयू लेना शुरू किया तो हमें इंटरव्हयू के दौरान बहुत सी परेशानी आयी। जैसे कि हम कहते, हम आपका इंटरव्हयू लेना चाहते हैं, वह कहती आज समय नहीं हैं। फिर आज नहीं कल, इस तरह हमारा समय जा रहा था। लेकिन कुछ औरतों ने हमें समझा, हमें समय दिया और हमे अच्छे से इंटरव्हयू दिया। हम जो सवाल उनसे पुछ रहे थे उसका सही-सही जवाब दे रहे थे। हमें अच्छा भी लगा। हमें कुछ और औरतों का इंटरव्हयू लेना था, इसलिए हम झोपडपट्टी में रहनेवाली औरतों का इंटरव्हयू लेने गये तो उन औरतों ने हमें अच्छे से इंटरव्हयू दिया। हमने सब मिलकर २९ इंटरव्हयू लिये। हमने ज्यादातर इंटरव्हयू पुछकर लिखा और रेकॉर्ड भी किया। इंटरव्हयू के दौरान हमें अलग अनुभव आया। हमने उनकी जिंदगी, बचपन, व्यवसाय सबके बारें में पुछा तो उनकी बाते सुनकर हमें बहुत बुरा लगा। और कोई-कोई औरते इंटरव्हयू देते समय रो रही थी और कह रही थी कि हमारा बचपन, हमारी जिंदगी दुसरे की जिंदगी से बहुत बुरी हैं और हमने अपने जिंदगी में कोई खुशी नहीं पाई।

ऐसे अलग-अलग कुछ खट्टे-मीठे अनुभवों से भरा हुआ था हमारा डाटा कलेक्शन का टाईम। हमने बहुत मेहनत करके, परेशानी उठाकर यह जानकारी इकठ्ठा की। लोगों से मिले, 'मनीपोतवाली' औरतों के जिंदगी को करिब से जाना, मानो के उनके जीवन कहानी का हिस्सा ही बन गए।

- **ॲनॅलिसीस**

हमारा डाटा कलेक्शन हो गया था। उसके बाद हमारा ॲनॅलिसीस का वर्कशॉप खारघर में रखा था। हमारे ग्रुप से सिर्फ २ लडकियॉ गई थी। लेकिन ॲनॅलिसीस क्या होता हैं, हमें पता नहीं था। जिस दिन ॲनॅलिसीस का वर्कशॉप था। हमें थोडा सा डर लग रहा था कि ॲनॅलिसीस क्या हैं और ॲनॅलिसीस कैसे करना हैं?। उसके बाद सुनिल सर ने हमें सभी ग्रुप को समझाया कि ॲनॅलिसीस क्या हैं और कैसे करना हैं? यह थोडा सा समझ में आया। उसके बाद सब लोगों को सुनिल ने बोला कि सभी ग्रुप अपने-अपने ग्रुप में काम करेंगे। फिर सब लोग अपने-अपने ग्रुप में काम करने लगे। सबके ग्रुप में से ५ लोग आये थे और हमारे ग्रुप में से सिर्फ २ लोग ही थे। इसलिए कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या करना हैं और कैसे करना हैं। थोडा सा समझ में

आया था लेकिन हम केवल २ लोग होने के कारण थोडा प्रॉब्लेम आ रहा था। सब ग्रुप के लोग अपना-अपना काम कर रहे थे और हम दोनों सिर्फ एक-दुसरे से बात कर रहे थे और एक-दुसरे का मुँह देख रहे थे। उसके बाद हमने सुनिल को बुलाया कि हमें थोडा सा समझ मे आया लेकिन इसको कैसे करना, कैसे लिखना हैं, कैसे स्टार्ट करना हैं, तो सुनिल ने हमें बताया कि पहले टेबल बनाना हैं और सर ने हमें एक एक्झाम्पल दिया था कि ऐसी कितनी औरते हैं जिनका आपने इंटरव्हयू लिया हैं? उसके बाद हर एक इंटरव्हयू के पेपर पर औरत के नाम के बदले सिरिअल नंबर डालने के लिये कहा और उनकी फॅमिली में कितने लोग हैं और पढाई कितने तक हुई हैं? और यह काम कितने सालों से कर रहे हैं? उनकी उम्र और उसके हमें टेबल बनाने के लिए कहा। बचपन इसके उपर भी हमें टेबल बनाना था। यह काम करते समय हमें बहुत सारी डिफीकल्टी आयी, बहुत सारे प्रॉब्लेम भी आ रहे थे। क्योंकि हम सिर्फ ग्रुप में दो लोग ही थे और हमें ॲनॅलिसीस करते समय कठिनाई आ रही थी। जिसके कारण हम लोग बीच-बीच में सुनिल को बुला रहे थे। फायनली हमारा ॲनॅलिसीस का काम आधा हो ही गया। उसके बाद जब हम घर आये तो हम सब अपने खुद के ग्रुप के साथ बैठे। फिर हम सबने एक साथ मिलकर एक मिटींग रखा रेखा के घर। लेकिन उस दिन सबका आपस में झगडा होने लगा। इसलिए उसके दूसरे दिन हमने फिर से मिटींग रखा रेखा के घर में। माया और सुमन ने पुरे ग्रुप को समझाया कि ॲनॅलिसीस क्या हैं, कैसे करना हैं? फिर हम सबने मिलकर ॲनॅलिसीस का काम शुरू किया। उसके बाद पुकार ऑफिस में एक दिन का ॲनॅलिसीस का वर्कशॉप रखा था सुनिल ने। ॲनॅलिसीस को पूरा कैसे करना हैं यह सिखाया। उसके बाद सब लोग अपने-अपने ग्रुप में बैठकर ॲनॅलिसीस का काम चालू रखा। फिर से हमें अच्छी तरह से बताया। फिर हमने घर पर ग्रुप के साथ ॲनॅलिसीस का काम किया। फिर सुनिल ने हमें उसी दिन बताया कि और एक दिन ग्रुप के साथ बैठकर ॲनॅलिसीस का काम करेंगे। तो हम लोग मंगलवार को आए और ॲनॅलिसीस का काम को-ऑर्डीनेटर के साथ बैठकर पूरा किया। हमारा ॲनॅलिसीस का काम पूरा हो गया हैं। हमें बहुत अच्छा लग रहा हैं कि हमारा ॲनॅलिसीस का काम अच्छी तरह से पूरा हो गया हैं। और हमें यह सिखने मिला हैं कि ॲनॅलिसीस क्या हैं और आगे हम खुद से ॲनॅलिसीस कर सकते हैं।

अॅनॅलिस में हमने सीखा कि किसी भी विषय को किस तरह सामने लाएँ। अच्छे से लिखना सीखा। अॅनॅलिस करने के लिए महत्त्वपूर्ण चीज, हम एक साथ ग्रुप में काम कैसे करना चाहिए यह सीखा। और अॅनॅलिस में काम बहुत ध्यान देकर करना पडता हैं यह सीखा। हमें यह पता चला कि अॅनॅलिस में बहुत सारी प्रॉब्लेम आती हैं लेकिन इस प्रॉब्लेम का सोल्युशन कैसे निकालने का यह भी हमने सीखा और अॅनॅलिस में ऐसा हैं कि एक-एक वाक्य बहुत ध्यान से पढना पडता है और समझना पडता हैं।

आगे भी हमें अॅनॅलिस का फायदा बहुत अच्छे से होगा और हमारा जनरल नॉलेज बढेगा और हमें जॉब में भी अॅनॅलिस काम आयेगा। अगर हम कहीं दुसरी जगह ग्रुप में कोई और दुसरे टॉपिक पर रिसर्च करेंगे तो हमें इस अॅनॅलिस का फायदा बहुत अच्छे से होगा। ऐसे ही बहुत सारे कामों में अॅनॅलिस का फायदा होगा और हम दुसरों को भी सीखा सकते हैं, इसका फायदा जिससे हमारा भी जनरल नॉलेज बढेगा और दुसरों का भी।

रिसर्च मेथड्स

विषय :- मुंबई में मेघवाडी, जोगेश्वरीमें रहनेवाली मनीपोतवाली औरतों का व्यवसाय

उद्देश्य:- (अ) इन औरतों की सामाजिक परिस्थिती का अभ्यास करना।

(ब) इन औरतों के यह व्यवसाय चुनने के कारणों को समझना।

(क) इस व्यवसाय की वजह से इन औरतों की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिती और आरोग्य पर क्या-क्या परिणाम हुआ इसको जानना।

(ड) इन औरतों की उम्मीदे और भविष्य को समझना।

मेथड :- **इंटरव्हयू** :- हमने जोगेश्वरी में रहनेवाली २९ औरतों का गहराई में जाकर इंटरव्हयू लिया। इंटरव्हयू के पहले हम खुद के बारे में बताते थे। हम यह क्यों करना चाहते हैं यह बताते थे और उनकी अनुमती हो तो उनका इंटरव्हयू लेते थे। उनकी सारी जानकारी गुप्त रखी जायेगी। यह भरोसा भी लेते थे।

दुर्गी

मेरा जन्म गॉव में हुआ, मेरे गॉव का नाम निंबर्गी हैं । मेरे जन्म के बाद मेरी मॉ मुझे छोडकर हमेशा हमेशा के लिए चली गयी । गॉव के लोगों से मुझे पता चला कि मैं सिर्फ देड–दो महिने की थी मेरी मॉ और गॉववाले ऐरीकेरी देवी की पूजा के लिये जा रहे थे, उन्हें रेल्वे पटरी क्रॉस करनी थी । उस वक्त मेरी मॉ ने मुझे अपनी कमर पर बॉधा था । मुझे झाडियों में फेंककर मेरी मॉ ट्रेन के नीचे आकर मर गयी । मैने अपनी मॉ का चेहरा तक नहीं देखा था । मॉ कैसी होती है मुझे नहीं पता, मॉ का प्यार मुझे नहीं मिला । फिर मुझे मेरे पापा, बडे भाई और मौंसी ने पालपोसकर बडा किया । फिर मुझे स्कूल में डाला गया । मैं और मेरे दोस्त स्कूल जाया करते थे । मैं स्कूल में ज्यादा मस्ती करती थी, पढाई में ज्यादा ध्यान नही होता था । हमारे जो गुरूजी (टीचर) थे, वो हमे चिल्लाते थे, वह उस वक्त साइकल से आते थे, हमें पैर दबाने के लिए कहते थे, पढाई न करने पर बाल पकडकर दिवार से हमारा सिर पटकते थे । इसी कारण मैंने स्कूल जाना छोड दिया । मैं २ री तक पढी हुॅ । स्कूल नहीं जाती थी इसलिए मैं पुरा दिन घर में रहकर घर का काम करती थी । जैसे कि कपडा, बरतन धोना, खाना बनाना साथ ही साथ खेतों में भी काम करने जाती थी ।

जब मैं १३–१४ साल की हो गई तो मुझे साडी पहननी पडी । मेरे बडे भाई बहुत सख्त स्वभाव के थे, उन्हें ड्रेस पहनना, लडकों से बात करना या फिर लडकों से दोस्ती रखना यह सब पसंद नहीं था । पर मैं हमेशा चाहती थी कि मैं ड्रेस पहनू, कुछ अलग कपडे पहनू । पर ऐसा हो नहीं पाया, मैं हमेशा साडी पहनती हूॅ । सगाई होने तक मैं खेतों का और घर का पुरा काम करती थी । फिर मैंने यह काम शुरू किया मनीपोत का । सगाई के ७ साल बाद मेरी शादी हुई । मेरे पती

बहुत गरीब थे, उनका खुद का घर नहीं था, वह खुद दुसरे के घर में रहते थे । मेरा हमेशा से ही सपना था कि मेरा पती अच्छा हो, उनका खुद का घर हो । पर ऐसा कुछ भी नहीं था । फिर मैं मुंबई में आयी, यहॉ पर झोपडे में रहती थी । धीरे–धीरे मेरा खुद का घर बॉधा । कम से कम मुझे २०–२५ साल हुए मुंबई आकर । अब मुझे ५ बच्चे हैं, २ लडके – ३ लडकियॉ । मैं चाहती थी कि मेरे बच्चे इंग्लिश स्कूल में पढे । पर मैं मनीपोत का काम करती थी और सॉस–ससुरजी मंदिर के बाहर बैठकर भीख मॉगते थे, इसी से मेरा घर चलता था । मेरा पती काम पर नहीं जाता था, रोज दारू पिता था, जुआॅ खेलता था । ऐसी हालत में बच्चों को इंग्लिश स्कूल में कैसे डाले ।

मुझे बच्चों को कमर पर बॉधकर काम पे लेकर जाना पडता था । बच्चों को बी.एम.सी. स्कूल में पढाया । मेरा बडा बेटा ७ वी तक पढा हैं । मेरी दुसरी बेटी जब ५ वी कक्षा में थी तब स्कूल में डॉक्टर आया करते थे तो उनसे पता चला कि उसके दिल में छेद हैं । हमें कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था, २ लाख तक खर्चा होगा डॉक्टर ने बताया था । हम सब रो रहे थे । फिर मेरे पती ने ट्रस्ट से पैसे जमा किये और ऑपरेशन कराया । मैं अकेली कमाती थी, यह देखकर मेरे बडे बेटे ने स्कूल जाना छोड दिया और मेरे साथ कमाने लगा । मेरे बेटे ने उस वक्त से लेकर अभी तक मेरा साथ दिया हैं ।

कभी रिक्शा से तो कभी बस से जाती थी, अगर बस, रिक्शा ना मिले तो चलकर जाना पडता था । मैं दूर और पास जगह जाती थी जैसे कि अंधेरी, जोगेश्वरी, चकाला, शांतीनगर ऐसे एरिया में और चिल्ला–चिल्लाकर माल बेचती थी ''मनीपोतवाली.....सुई घे.....फनी घे.....'' तब १ रू., २ रू. के लिए पेटी को सर से उतारना, रखना पडता था । इस काम से सारी जरूरते पुरी नहीं हो पाती थी, पर मैं अपना घर चला लेती थी । तकलीफ भी होती थी जैसे कि दूर–दूर तक चलके जाने से बदन दर्द होना, सिर पर भारी पेटी रखने से सिर दर्द होना और

सबसे ज्यादा तकलीफ तो बारिश के वक्त होती थी कि हम काम पर नहीं जा पाते थे । घर में भुखे रहना पडता था । फिर हम भी बिमार पडते थे । मुश्किल होती थी बारिश में काम पर जाना । हमने अपने बच्चों के लिए कभी नये कपडे नहीं खरीदे । उन्हे मैं अपने काम पर पहचान के लोग जो जुने कपडे देते थे वह लाती थी और हमेशा से वही कपडे पहनकर बडे हुए हैं । मुझे बहुत बुरा लगता था । आज मेरी दोनों लडकियॉ पढ रही हैं । अब मैं अपने परिवार के साथ खुश हूॅ, मेरा पती भी अब काम पर जाता हैं । मैं अब दूर–दूर घूमकर माल नहीं बेच पाती । शांतीनगर के बाजार में जाकर बैठकर माल बेचती हूॅ ।

अब मैं चाहती हूॅ कि मेरी बेटीयॉ आगे पढे–लिखे, कुछ बने, अच्छा काम करें और कमाये ना ही किसी पर निर्भर रहें । वह अपने पैरों पर खडी हो और अपने पती के भरोसे ना रहे । हमेशा खुश रहे । खुद कमाये, खुद खाये ।

चौरी

मेरा नाम चौरी हैं, मेरा जन्म कल्याण में हुआ था । मुझे अपना जन्मदिन याद नहीं हैं और ना ही मेरे माता–पिता को याद हैं क्योंकि ना ही वह पढे–लिखे थे और ना ही आसपास के कोई लोग । मेरे दो भाई, २ बहने और माता–पिता हम सब एक घर में रहते थे । मै और मेरे भाई–बहन बचपन में बहुत मस्ती करते थे । मेरे बडे भैया और बडी बहन स्कूल जाती थी । मुझे उन्हे देखकर अच्छा लगता था, धीरे–धीरे मैं भी स्कूल जाने लगी । पर मैं ३ री तक ही पढ पायी क्योंकि मेरी बडी बहन ने स्कूल जाना छोड दिया था क्योंकि तब कोई भी स्कूल नहीं जाता था । और हमारे यहॉ लडकियॉ स्कूल जाते ही नहीं थे क्योंकि सभी यही कहते थे कि स्कूल जाकर क्या करेगी, लडकियॉ हैं शादी करके पती का घर ही संभालना हैं । इसलिए कोई भी लडकियॉ स्कूल नहीं जाती थी । हम सब हमारी मॉ की मदद करते थे जैसे कि लकडीया ढूँढकर लाना, मॉ के आने से पहले खाना बनाकर रखते थे, फिर खेलने जाते थे । हमें नये–नये कपडे पहनना अच्छा लगता था और पिक्चर देखना अच्छा लगता था । मेरी मॉ यह जरूरते पुरी करने की बहुत कोशिश करती थी०००००० जैसे कि वह जब भी काम पर जाती थी तो वहॉ के लोगों से कपडे मॉगकर लाती थी या कभी उसके पास पैसे होते तो वह कपडे खरीदकर लाती थी । इसी तरह दिन गुजरते गये तो हम बडे होते गये । मेरे लिए एक रिश्ता आया था तो मेरी मॉ ने मेरा रिश्ता तय कर दिया बिना जाने वह क्या काम करता हैं, दारू पिता हैं या नहीं कुछ भी पता नहीं था फिर भी शादी करवा दी । शादी के बाद मेरे पती बहुत पिते थे और मुझे पैसों के लिये मारते थे तब मैं पैसे कहॉ से लाती । हम सब जॉईट फॅमिली में रहते थे, बहुत बडा परिवार होने के कारण घर में बहुत गरीबी आ गयी थी और पैसे बहुत कम थे । हमारी जरूरते पुरी नहीं होती थी इसलिए हमें इस काम को चुनना पडा । इस काम से हमें शाम का खाना

और छोटी–मोटी जरूरते पुरी होती थी और यह काम मेरी मॉ भी करती थी और हमारी आसपडोस की औरते भी यही काम करती थी । इसलिए मैंने यह काम चुना । मैं सुबह घर का सारा काम करती थी फिर काम पर जाती थी, फिर शाम को आकर शाम का खाना बनाती थी । धीरे–धीरे दिन युही बीतते गये, फिर मैं प्रेगनन्ट हुई तब सब बहुत खुश थे कि लडका पैदा होगा तो वंश को आगे बढायेगा । मेरी डिलिव्हरी हुई और मुझे लडका पैदा हुआ जो वंश को आगे बढायेगा, मेरा नाम रोशन करेगा । मैंने दो महिने बाद काम करना शुरू किया और अपने बच्चे को पीठ से बॉधकर ले जाती थी तो बहुत तकलीफ होती थी । धूप में चलकर जाना, बच्चे को पीठ पर बॉधना और सर पर पेटी रखकर चलना बहुत मुश्किल था । फिर भी धीरे–धीरे दिन कटते गये । फिर तीन साल बाद मैं फिर से प्रेगनन्ट हुई तो तब मुझे एक लडकी पैदा हुई तब सब इतने खुश नहीं थे पर मैं उसके साथ बहुत खुश थी । मैं उसे भी अपने पीठ पर बॉधकर लेकर जाती थी । मेरे पती ने अभी भी दारू पिना नहीं छोडा था, ३ बच्चे थे, बच्चों की कोई जिम्मेदारी नहीं निभाते थे, उन्हें कभी अपना प्यार नहीं देते थे । उलटा मुझे मारते थे पैसों के लिए खुद काम पर जाते थे फिर भी मुझसे पैसे मॉगते थे । मैं जो भी काम से पैसे कमाती थी वह सारा अपने बच्चों को, घर के शाम के खाने के लिये खर्च हो जाता था । मेरे पती जो भी कमाते थे सारा पैसा पीने में उडाते थे । मैं नजदीक के घरों में भी जाती थी तब क्योंकि बच्चों की चिंता होती थी । मैं काम पर खुद से लोगों को बुलाती थी और हर एक गली में आवाज देती थी क्योंकि खुद से कोई नहीं आता था । इस तरह से मै काम करती हूॅ और पुरी कोशिश करती हूॅ कि जो मुझे नहीं मिल सका वह मेरे बच्चों को मिले, उन्हें जो भी चाहिए वह उन्हें दिला सकूॅ । उन्हे अच्छे से पढा–लिखा सकूॅ । मेरा बडा बेटा राजू ९ वी कक्षा तक ही पढ पाया, वह पढने की इच्छा नहीं रखता था । उसे हमने बहुत समझाया पर वह नहीं सुना । अब वह काम पर जाता हैं । उसकी शादी हो गई हैं और एक बच्ची का बाप हैं । मेरी

बडी बेटी का ग्रॅज्युएशन हुआ हैं और सी.ए. का कोर्स कर रही है और उसने सी. पी.टी. और आय.पी.सी.सी. की परिक्षा भी दी हैं जो कि सी.ए. अंतर्गत का कोर्स हैं । वह आज आर्टिकलशीप कर रही है जो एक सी.ए. के साथ काम कर रही हैं । मुझे बहुत खुशी होती हैं कि मेरी बेटी इतने आगे चली गई हैं । मेरी छोटी बेटी भी ग्रज्युएशन कर रही हैं और साथ ही कम्प्युटर का कोर्स भी कर रही हैं और साथ ही पुकार में भी काम कर रही हैं । जो मैं नही कर पायी आज वह मेरी बेटीया कर रही हैं । मेरी उनसे बस यही उम्मीद हैं कि वह आगे जाकर अच्छी नौकरी करें । एक अच्छी इन्सान बने और कभी भी किसी पर डिपेन्ड ना हो । और एक बात बोलना चाहती हूॅ कि मेरे पती आज भी दारू पिते हैं, वह मुझे कभी भी मारने आते है तो मेरे बच्चे उन्हें रोक लेते हैं । इस वजह से वह मुझे हाथ भी नहीं लगा सकते हैं और मैं इस काम से बहुत खुश हूॅ और मुझे अपनी दोनों बेटीयों पर बहुत गर्व हैं कि मैं उनकी मॉ हूॅ और वह मेरे बच्चे हैं ।

विश्लेषण

हमने २९ औरतों का इंटरव्हयू किया। इस इंटरव्हयू का मकसद यह था कि इन औरतों की जिंदगी को समझना। जब उनसे हम बातें करने लगे तब बहुत सारी जानकारी हमारे सामने आयी। इस जानकारी को अच्छी तरह से समझने के लिए हमने ६ भागों में बाटा हैं। सबसे पहले यह औरते कौन हैं, इनकी उम्र, पढाई इस बारे में जानकारी दी हैं। उसके बाद उनका बचपन, उनकी शादी, पति का व्यवसाय इस बारे में जानकारी लिखी हैं। इन औरतों के व्यवसाय के बारे में पुरी तरह से जानकारी चौथे भाग में दी गई हैं, तो उनके सपने, उम्मीदों के बारे में आखिरी भाग में जानकारी दी हैं।

हमारे ग्रुप ने जोगेश्वरी के मेघवाडी एरिया में रहनेवाली मनीपोतवाली औरतों का व्यवसाय इस विषय में रिसर्च किया। इस रिसर्च में हमने एकूण २९ औरतों का इंटरव्हयू लिया। उनकी जिंदगी, बचपन, व्यवसाय, बच्चों, उनकी उम्मीदे, सपने इन सब के बारे में सवाल पुछा। सबसे पहले ये औरते कौन हैं? कहाँ से आई हैं? उनकी पढाई कितनी हुई? उनके परिवार में कितने लोग हैं? वो यह काम कितने सालों से कर रही हैं? इसके बारे में जानकारी प्राप्त की।

टेबल नं. १ :- उम्र

२० - ३४	३५ - ४४	४५ - ६५	एकूण
४	१७	८	२९

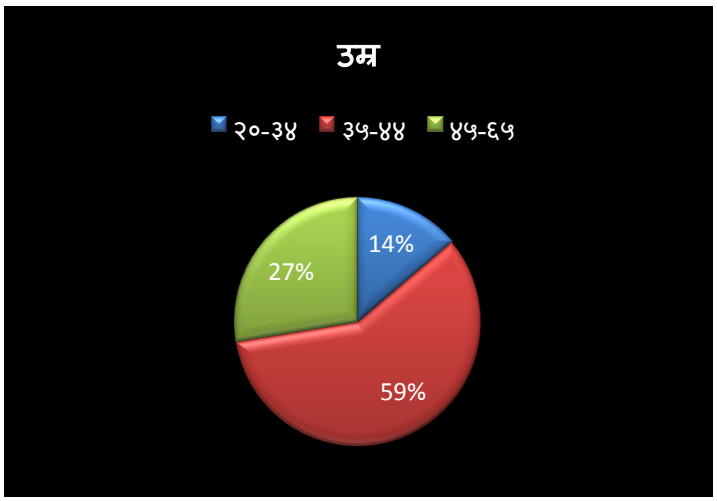

टेबल नं. १ में यह दिखाई दे रहा हैं कि सबसे ज्यादा औरते ३५ - ४४ उम्र के ग्रुप में हैं यानि १७। उसके बाद ८ औरते ४५ - ६५ के ग्रुप में हैं। सबसे कम यानि ४ औरते २० - ३४ के ग्रुप में हैं। इससे यह समझ में आता हैं कि ३५ - ४४ की ग्रुप में ज्यादा औरते हैं। ऐसा क्यो होगा? यह हमें अभी पूरी तरह से मालूम नहीं। इसके दो वजह हो सकते हैं :-

१. हमने जो औरतों का इंटरव्हयू लिया वो ज्यादातर यही उम्र की थी। इसलिए उनसे बात करना आसान था।
२. २० - ३४ से जो औरते हैं, घरकाम, हाऊसकिपिंग, भांडी-बर्तन जैसे अलग काम भी करती होगी। इसलिए उनकी संख्या कम हैं। जो औरते ४५ - ६५ उम्र की है, उनकी संख्या इसलिए कम हैं क्योंकि उनकी उम्र ज्यादा हैं और वह बुढ्ढी हो गई हैं।

टेबल नं. २ :- शिक्षण

कुछ भी नहीं पढी	१ ली पढी	२ री पढी	३ री पढी	एकूण
२४	२	१	२	२९

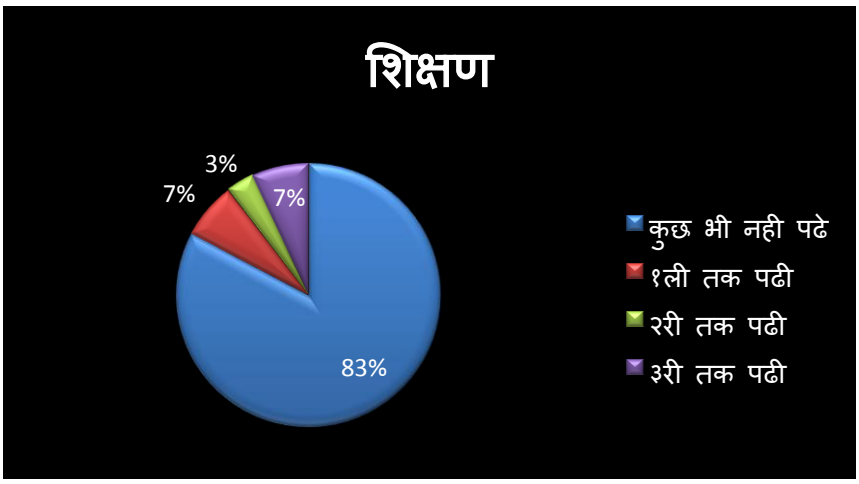

इस टेबल में कुछ भी नहीं पढी हुई औरते २४ हैं। पढी हुई ५ औरते हैं। ज्यादा से ज्यादा ३ री तक पढी हैं।

कुछ भी नहीं पढी हुई २४ औरते हैं। उनकी पढाई नहीं हुई ऐसा क्यो?

कारण- १) गॉव में रहते थे, गॉव में स्कूल की सुविधा नहीं थी।

२) स्कूल नाम से अन्जान थे।

३) स्कूल के बारे में जानकारी होते हुए भी पढ नहीं पाए क्योंकि घर की परिस्थिती खराब थी।

- इन वजहों से औरते पढ नहीं पाई। इसलिए कुछ भी नहीं पढी टेबल में औरतों की संख्या ज्यादा यानि २४ हैं।
- १ ली पढी टेबल में २ औरते हैं क्योंकि जब वो स्कूल जाते थे सर टीचर मारते थे।
- इस टेबल में १ औरत है जो २ री पढी हैं। हमने जब उनसे पुछा कि आप २ री तक ही क्यों पढी हैं तो उन्होंने बताया कि जब मैं स्कूल जाती थी वहाँ की टीचर हमेशा लेट आते थे और हमसे हाथ-पैर दबवाते थे। उपर से बहुत मारते-चिल्लाते थे। इस कारण के वजह से स्कूल छोडा। इसलिए २ री तक पढी टेबल में १ औरत हैं।
- ३ री पढी पहली औरत ने कहा : ''मुझे मेरी छोटी बहन को संभालना था, इसलिए मेरे घरवालों ने स्कूल से नाम निकालकर मुझे घर में बिठा दिया। इस वजह से मैं ३ री तक ही पढ पायी।''
- ३ री पढी दुसरी औरत ने कहा : ''जब मैं ३ री में थी तब हमारे गाँव में कोई लडकी स्कूल नहीं जाती थी। मेरे घरवालों ने बोला कि स्कूल जाना बंद कर दे क्योंकि हमारे गाँव में कोई लडकी स्कूल नहीं जाती थी। मेरे अलावा हमारे समाज में लडकियों को पढने नहीं देते। बोलते हैं कि पढ-लिखकर क्या करेंगी। आखिर उन्हें चुल्हा-चौंका ही संभालना रहता हैं। इस कारण से मैं ३ री तक ही पढ पायी।''

टेबल नं. ३ :- परिवार में कितने लोग हैं?

१ - ५	६ - ११	एकूण
११	१८	२९

जब हमने इन औरतों से पुछा कि आपके घर में कितने लोग हैं तो २९ औरतों में से ११ ऐसी औरते है जिनका परिवार १ - ५ की संख्या में आता हैं। और १८ ऐसी औरते है जिनका परिवार ६ - ११ की संख्या में आता हैं। इसका कारण शायद यह हो सकता हैं कि लडका चाहिए तो इतने बच्चे पैदा किये हो।

टेबल नं. ४ :- कितने साल से यह काम कर रहे हैं?

१० - २०	२१ - ३०	३१ - ४०	एकूण
१३	११	४	२९

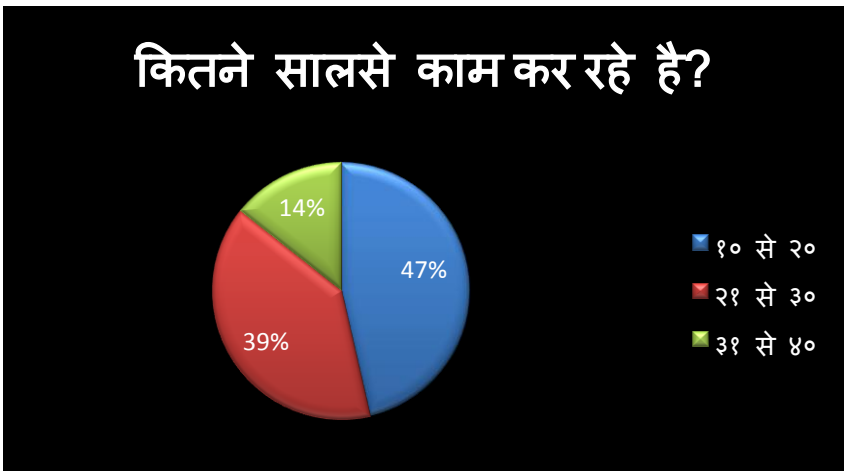

१. हमने जब उन औरतों का इंटरव्हयू लिया तो हमें पता चला कि २९ औरतों में से १३ औरते ऐसी हैं जो १० - २० साल की उम्र से यह काम करते आ रहे है। इसका कारण शायद यह हैं कि ज्यादातर औरते अब अलग-अलग काम करती हैं। जैसे कि घरकाम, खाना बनाने का काम, बर्तन घासने का काम भी करती हैं। इस कारण इनकी इतनी संख्या हैं। और इस टेबल में इनकी संख्या ज्यादा हैं।

२. २१ - ३० की उम्र में काम करनेवाली औरतों की संख्या ११ हैं। इसका कारण यह हैं शायद इन्होंने अपने बचपन में पढाई नहीं की और उनकी मम्मी ने भी यही काम किया हैं। और उनके पती भी बहुत दारू पिते थे और उनको मारते थे तो इसके अलावा उनको और कोई काम चुनना नहीं पडा तो यह काम कर रही हैं। इसलिए इनकी संख्या ११ हैं।

३. ३१ - ४० की उम्र में काम करनेवाली औरतों की संख्या सिर्फ ४ हैं। इस टेबल में यह सबसे कम हैं। इसका कारण यह हो सकता हैं कि यह अब बुढे हुए हैं, इनकी ऑखो को प्रॉब्लेम होता हैं। ठीक से दिखाई नहीं देता इसलिए इन औरतों की संख्या इतनी कम हैं।

बचपन

हमने मनीपोत पर जानेवाली औरतों से उनके बचपन के बारें में पुछा तो उन्होंने हमें बताया कि ....

हमारा बचपन दुसरे बच्चों के बचपन से अलग था। ये जो मनीपोत का काम हैं यह हमारी मॉ ने शुरू किया था। हमारे पिताजी डब्बा डाकन का काम करते थे।

उनमे से एक औरत ने कहा, मेरे माता-पिता यह काम इसलिए करते थे क्योंकि वो पढे-लिखे नहीं थे, इसलिए हमें भी उन्होंने पढाया-लिखाया नहीं। इसलिए आज हम यह काम करते हैं। अभी हमें ऐसा लगता हैं काश हम पढे-लिखे होते। कुछ औरतों ने बताया कि बचपन में ही उनपर बहुत सारी जिम्मेदारीयॉ थी जैसे कि घर का सारा काम करना, भाई-बहन को संभालना, मॉ-पिताजी के घर आने से पहले खाना बनाकर रखना। उनमें से एक औरत ने कहा हमने अपनी बचपन की जिंदगी जी ही नहीं, उन्होंने कहा मेरे ६ भाई-बहन हैं। उनमें से मेरे पिताजी मुझे बहुत प्यार करते थे। वो कोई भी चीज लाते तो पहले मुझे देते थे और बोलते मेरी बेटी मुझे बहुत प्यारी हैं। उनमें से और एक औरत ने कहा मेरे घर की परिस्थिती बहुत खराब थी, पिताजी दारू पिते थे, मॉ, मुझे और भाई-बहनों को मारते थे। अभी हमें ऐसा लगता हैं कि बहुत छोटी सी उम्र में ही मॉ पिताजी ने हमपर जिम्मेदारीयॉ दे दी।

और इंटरव्हयू के दौरान हमें पता चला कि बहुतजनों के पिता अपना घर ना संभालते हुए, बच्चों की देखभाल न करते हुए, शराब पी कर पत्ते (जुऑ) खेलते थे। बचपन में हमें मॉ-पिताजी का प्यार नहीं मिला। ऐसा ज्यादातर औरतों ने कहा। उनमें से एक औरत ने कहा, उनकी मॉ को टी.बी. की बिमारी होने के कारण उनकी मृत्यू हो गयी थी।

हमें इंटरव्हयू से पता चला कि बहुत सारी ऐसी औरते हैं, जिनकी शादी बचपन में ही हो गयी थी जैसे की- ७, साल, १० साल, १२ साल की उम्र में।

औरतों ने हमें बताया कि १० साल की उम्र में ही उन्ही साडी पहनने पडी थी। शादी के एक साल बाद हम मॉ बने, जब हम खुद एक बच्चे थे तब हमने बच्चे को जन्म दिया। हमारा सारा बचपन इन्हीं सारी जिम्मेदारीयों में निकल गया। हम बचपन को अच्छे से जी नहीं पाये। जैसे कि

- खेलना-कूदना, स्कूल जाना, अपनी जिंदगी अपनी तरह से जीना, दूर घुमने जाना यह सब कुछ हमें बचपन में नहीं मिल पाया।

''एक औरत ने बताया कि बचपन में उन्होंने बहुत दुख देखा हैं। मॉ-पिताजी मनीपोत का काम करते थे। परिवार बहुत बडा था इसलिए हमें खाना भी नहीं मिलता था। हम बहुत दिन तक भुखे रहते थे। गरिबी के कारण हम पढ नहीं पाये।''

मनीपोतवाली औरतों का बचपन समझने के बाद हमें उनकी शादी और शादी के बाद की जिंदगी कैसी रही थी यह जानने की इच्छा हुई। उनकी शादी कौन-सी उम्र में हुई? वो कहॉ पे रहती थी? शादी के बाद कहॉ पे रहने लगी? पती का व्यवसाय क्या था? यह सारे सवाल पुछे, उनके अलग-अलग जवाब मिले।

कहॉ पर रहते थे?

सारे लोग जोगेश्वरी में रहते हैं। पर सब एक ही गॉव से नहीं आये हैं। हम जब औरतों से पुछ रहे थे तब उन्होंने बताया कि एक विठ्ठलवाडी से आये हैं, कोई सोलापूर का तो कोई सिद्धापूर से आये हैं। लोग पहले गॉव में रहते थे, अब वो सारे जोगेश्वरी में रहते हैं।

टेबल नं. ५ - शादी की उम्र

५ - ९	१० - १५	१५ - २०	पता नहीं	छोटी उम्र	शादी नहीं हुई	एकूण
१	९	१२	३	३	१	२९

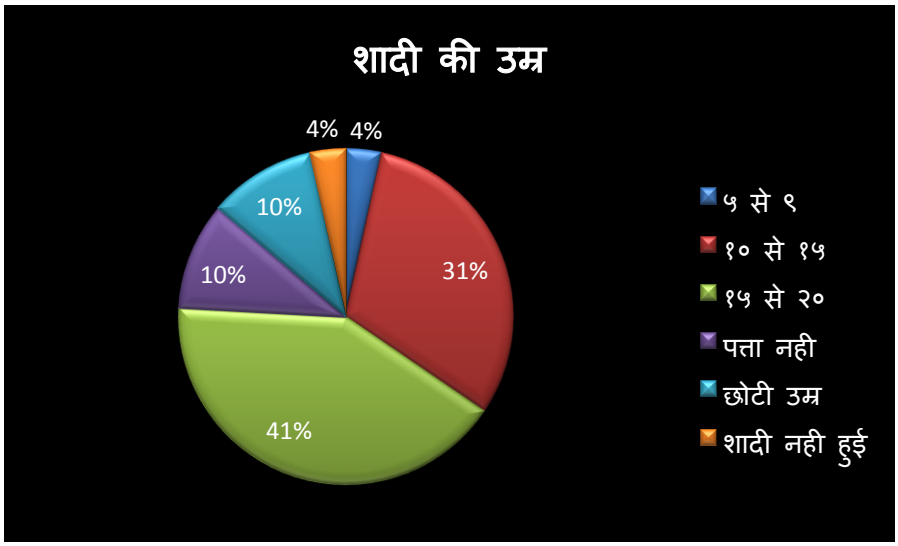

इस टेबल में हमने यह दिखाने की कोशिश की हैं कि जब हमने उनसे उनकी जिंदगी के बारें में पुछा तो हमें पता चला कि उनकी शादी की उम्र क्या थी?

- इस टेबल में ५ - ९ साल की उम्र में १ औरत की शादी हुई थी। इसके पिछे क्या कारण हैं हमने पुछा तो उसने बोला कि उस उम्र में शादी होना कोई नई बात नहीं थी। मेरे घरवालों ने मेरी उस उम्र में शादी करायी थी। मेरी शादी उस उम्र में होने के कारण मेरी बेटी को पोलिओ हो गया और मेरी बेटी जिंदगी भर चल नहीं पायेगी। क्योंकि मेरे पति की उम्र मुझसे बडी थी, करीब १५-२० साल बडे थे।
- इस टेबल में १० - १५ के ग्रुप में ९ जन हैं। जब हमने उनसे पुछा कि इसके पिछे क्या कारण हैं तो पता चला कि पहले माता-पिता बहुत जल्दी शादी करा देते थे। इसलिए इस टेबल में ९ जन हैं।
- १५ - २० के ग्रुप में १२ जन हैं। इस ग्रुप में इतने लोग इसलिए हैं क्योंकि १८ साल में लडकी की शादी होती हैं।
- पता नहीं के ग्रुप में ३ लोग हैं। इसके पिछे का कारण जब हमने औरतों से पुछा की उनकी शादी कब हुई तो उन औरतों को याद नहीं कि उनकी शादी कब हुई थी।
- इस तरह से छोटी उम्र के ग्रुप में ३ लोग हैं। जब हमने पुछा तो उन्होंने बोला कि मेरी शादी छोटी उम्र में हुई पर मुझे उम्र याद नहीं तो इसलिए इस ग्रुप में ३ लोग हैं।
- शादी नहीं हुई की ग्रुप में १ हैं। हमने उनसे पुछा तो उन्होंने बोला कि मेरी शादी नहीं हुई।

इस टेबल से यह स्पष्ट हो रहा हैं कि २९ औरतों में से १२ औरतों की शादी १९ साल से पहले हुई थी।

जहाँ पर भारत देश का कानून कहता हैं कि लडकी की शादी १८ साल की उम्र में होना चाहिए। वहीं पे हमें यह समाज की सच्चाई भी नजर आती हैं।

शादी होना, शरीर तैयार होने से पहले ही बच्चों को पैदा करना, घर और व्यवसाय संभालने की जिम्मेदारी अपने कंधो पर उठाना। इन सब चीजों से यह औरते कम उम्र में त्रस्त हो जाती हैं।

एक औरत ने कहा कि, ''मेरी शादी की उम्र ७ साल की थी। मैं बहुत छोटी थी और मेरा पती मुझसे बहुत बडा था।''

उन्होंने हमें अपनी शादी के फोटो भी दिखाए। उस फोटो में साफ दिखाई दे रहा था कि वह कितनी छोटी हैं। आज उनकी एक लडकी हैं, वह शारिरीक रूप से कमजोर हैं, उसका दिमाग छोटे बच्चे जैसा हैं। वह चल-फिर नहीं पाती, बहुत कमजोर हैं।

टेबल नं. ६ - पती क्या काम करते थे?

हमने शादी के बारे में पुछा। उसके बाद उनके पती और व्यवसाय के बारे में भी जानकारी ली।

डबा-डाकन	मनीपोत	काम पर जाते थे	कुछ नहीं करते थे	पता नहीं क्या	शादी नहीं हुई	पती मर गये	एकूण
१०	१	४	५	७	१	१	२९

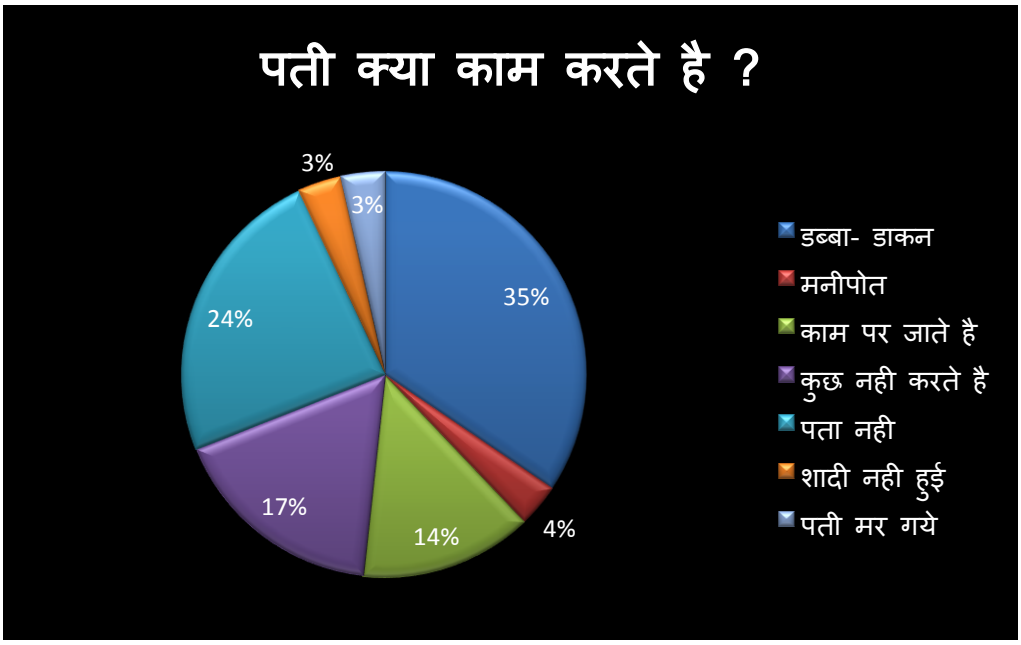

- इस टेबल में डबा-डाकन काम के ग्रुप में १० औरते हैं। इसके पिछे का कारण हमें पता चला कि पहले सारे पती पारंपारिक डबा-डाकन का काम करते थे। उन्होंने यह काम बचपन से सिखा था। वो पढे-लिखे नहीं थे और इस काम के अलावा और कोई काम करते नहीं थे। इसलिए इस ग्रुप में १० लोग हैं।
- ‘‘मनीपोत का काम करते थे मेरे पती और मेरी शादी होने के बाद हम दोनों ने मनीपोत का काम चालू किया, तब हम कुर्ला में रहते थे। तब एक या दो लोग जाते होंगे। उनके

पती मनीपोत का काम करते थे, इसलिए मेरे पति भी जाते थे। मनीपोत का काम करने बस १ ही जाता था। इसके पिछे का कारण हमें पता चला कि पहले भी औरते और उनके पती दोनों मनीपोत का काम करते थे।'' इसलिए इस ग्रुप में एक जन हैं।

- काम पर जाते थे इस ग्रुप में ४ लोग हैं। इसके पिछे का कारण जब हमने औरतों से बातचीत की तो पता चला कि उनके पती काम पर जाते थे।
- दुसरी औरतों से पुछने गये तो उन्होंने बताया कि ''काम तो करते थे पर पता नहीं क्या काम करते थे। हम अगर उन्हें पुछते तो वो बोलते थे कि तेरे को क्या करना हैं। और बोलते थे कि काम पर जा रहा हूँ, वो बस नहीं हैं क्या?''
- पता नहीं क्या करते थे इस ग्रुप में ७ लोग हैं। इसके पिछे का कारण जब हमने पता करने की कोशिश की तो पता चला कि पति जो काम करते थे वह अपनी पत्नी को नहीं बताते थे वो क्या काम करते हैं। इसलिए कुछ औरतों को पता ही नहीं कि उनके पति क्या काम करते हैं।
- तिसरी औरत से पुछा कि आपके पती क्या काम करते हैं तो उन्होंने बोला कि ''पती काम पर जाते हैं या नही पता नहीं। बस वो सुबह से रात तक घर से बाहर रहते हैं और कुछ बताते नहीं कि काम कर रहे हैं या नहीं।''
- कुछ नहीं करते इस ग्रुप में ५ लोग हैं। इसके पिछे का कारण जब हमने औरतों से पुछा कि आपके पती क्या काम करते हैं तो उन्होंने बोला कि ''पति क्या काम करते थे वह तो दारू पिते हैं। और कोई काम नहीं करते हैं, दारू पी कर मुझे मारते हैं और कोई काम नहीं करते।''
- ''मेरा पती कोई काम नहीं करता। बस घर और बाहर घूमता रहता हैं और रात को दारू पी कर मुझे मारता हैं। घर में तमाशा करता हैं, मुझ पर उन्हें कोई दया नहीं आती।''
- शादी नहीं हुई की ग्रुप में १ हैं। हमने उनसे पुछा तो उन्होंने बोला कि मेरी शादी नहीं हुई।
- पती मर गया के ग्रुप में १ हैं। हमने उनसे पुछा तो उन्होंने बोला कि मेरे पती मर गये हैं।

इससे यह सामने आया कि इन औरतों के पती घर-परिवार में मदद करने में असमर्थ रहे हैं। घर की परिस्थिती, बच्चों की जिम्मेदारी और गरिबी के कारण जरूरते पुरी नहीं होती थी, पती

कमाई नहीं देता था। इन हालात में इन औरतों को मनीपोत का व्यवसाय करने के अलावा कोई दुसरा रास्ता नहीं था।

इसी के साथ पती का व्यवसाय/कमाई के बारें में कुछ भी जानकारी ना होना यह चौकानेवाली बात हैं। उसकी वजह से पतीयों को फायदा होता हैं। पुरी कमाई घर पर ना देते हुए अपने बिडी, सिगारेट, दारू पर खर्च कर सकते हैं।

मनीपोत व्यवसाय की सामान की सूची

अ.क्र.	सामान	रूपया	अ.क्र.	सामान	रूपया
१.	काजल	१०.००	२१.	कंगी	५.००/१०.००
२.	सुई	२.००	२२.	बच्चों का बंगडी	१०.००
३.	आयना	२०.००	२३.	कमरपट्टा	२०.००
४.	बिंदी	५.००	२४.	बाजूबन	२०.००/५०.००
५.	पायल	५०.००	२५.	वाळा	१०.००/२०.००
६.	चुडी	१०.००	२६.	हेअर बॅंड	१०.००
७.	बाल का रबर	५.००/१०.००	२७.	लिप्स्टीक	५.००/१०.००
८.	बाल का क्लीप	५.००	२८.	आऊट लायनर	१०.००
९.	टिक टिक अकडा	५.००	२९.	आय लायनर	१०.००/२०.००
१०.	बो-पीन	५.००	३०.	मस्करा	१०.००/२०.००
११.	मेकअप बॉक्स	५०.००/१००.००	३१.	बिंदीया	५.००/१०.००
१२.	नेल पेन्ट	५.००/१०.००	३२.	चैन	५.००/१०.००
१३.	थीनर	१०.००	३३.	काला धागा	२.००/३.००
१४.	नेकलेस	५०.००/१००.००	३४.	लाल धागा	२.००/३.००
१५.	रिंग	५.००/१०.००	३५.	साडी पिन	५.००
१६.	मंगलसूत्र	१०.००	३६.	रिबिन	५.००
१७.	बाली	५.००/१०.००	३७.	क्रीम	३०.००
१८.	नथनी	१०.००	३८.	पावडर	१०.००
१९.	ब्रेसलेट	१०.००	३९.	साबुन	१०.००
२०.	छोटा आयना	१०.००	४०.	खुलखुला खिलौना	५.००

यह सारा सामान मनीपोतवाली औरते बेचती हैं । और साथ ही हमने सामान का पैसा लिखा हैं । वह यह सामान उस किंमत में बेचती हैं । इतना सारा सामान लेकर वह घूमती हैं । वो जो सामान बेचती हैं वह सामान आम आदमी ज्यादा उपयोग करता हैं ।

कैसे?

जब हमने उनके व्यवसाय के बारें में सवाल पुछे कि अपना व्यवसाय कैसे करते हो? क्यो करते हो? इस व्यवसाय से आपकी क्या-क्या परेशानियाँ होती हैं?

तभी हमें पता चला कि यह औरते व्यवसाय कैसी करती हैं। ज्यादातर औरते व्यवसाय छोटी उम्र में ही शुरू किया। और एक औरत ने यह बताया कि, ''उनकी माँ भी यही काम करती थी इसलिए वह भी यह काम चुना और घर में ज्यादातर पैसे नहीं होने के कारण घर के सदस्य इतने थे कि माँ के कमाने से नही पुरता था तो इसलिए मैं भी छोटी सी उम्र में ही यह काम करना शुरू किया।''

और हमने जब औरतों से पुछा कि उनका पहला अनुभव कैसा था तो उन्होंने यह बताया कि हमें पहले बहुत डर लगता था कि कोई हमसे सामान लेगा या नही क्योंकि कोई-कोई औरते अपनी पहचानवाली औरतों से ही सामान लेती हैं तो इसलिए हमें डर लग रहा था। और अनजान रास्ते भी थे तो हमें डर लग रहा था कि कहीं खो ना जाए क्योंकि किसी से ज्यादा पहचान नहीं थी। एक औरत ने यह कहा कि, ''मेरा पहला दिन का अनुभव बहुत ही अच्छा था पर थोडी तकलीफ भी हुई लेकिन मैं अपनी माँ के साथ गई थी। पहले दिन काम पे तो बडा अजीब लग रहा था, पर इसकी खुशी थी कि कुछ नया करने जा रही हूँ तो अच्छा करू। जब मैं अपनी माँ के साथ गई तो मुझे गलियाँ याद हो गई थी। पहले दिन अच्छा लग रहा था कि कुछ मदद कर पायी अपनी माँ को और कुछ अपने फॅमिली के लिए कर पा रही हूँ। अच्छा लगा पहला दिन, साथ ही थोडासा, पैर दुखने लगे थे और धूप बहुत थी तो चलने में प्रॉब्लेम हो रही थी, फिर भी खुश थी कि घर में पैसे आ रहे हैं।''

औरते पढी-लिखी नहीं थी और साथ ही यह औरते अपने छोटे-छोटे बच्चों को अपने कमर पे बांधकर व्यवसाय करती थी क्योंकि बच्चों को संभालनेवाला कोई नहीं था और व्यवसाय वह गली-गली घूमकर, जोर-जोर से चिल्लाकर, दूर-दूर जाकर लोगों को अपने आवाज से अपने पास बुलाते थे। जैसे कि एक औरत ने यह बताया कि उसने शादी के बाद यह काम शुरू किया। उनका पती बहुत पीता था तो उसने यह काम करना शुरू किया तो वह जब अपने बच्चों को संभालनेवाला कोई नहीं था तो वह अपने बच्चों को पीठ पर बाँधकर लेकर जाती थी और धूप में चलती थी और दूर-दूर गली में घूम-घुमकर जोर जोर से लोगों को चिल्लाकर लोगों को

बुलाती थी। वह कुछ इस तरह चिल्लाकर बोलते थे कंगी, काजल, टिकली, मनीपोतवाली। यह आवाज उनकी पहचान थी कि वह मनीपोतवाली हैं।

और वह यह काम दूर-दूर जगह पर जाकर करते जैसे कि चर्चगेट, मार्केट में बैठना, विरार, मालाड, विलेपार्ले, अंधेरी और जोगेश्वरी। और जो ज्यादा उम्र की औरते हैं वह नजदिकी एरिया में जाती हैं जैसे कि शंकरवाडी, शामनगर, पुनमनगर, इदगाह मैदान, पान की झोपडीयॉं के जगह पर जाती थी।

और हमने उन औरतों से पुछा कि सामान कौन देता है आपको, तो उन्होंने बताया कि हम कटलरी माल का सामान हम हमारे एरिया में रहनेवाना एक आदमी, जिसका दुकान हमारे एरिया में हैं। हम उनसे उधार या पैसे से लेते हैं। ऐसी तीन दुकाने हैं पर ज्यादातर हम उसी आदमी से लेते हैं। क्योंकि हमारी बिसी उनके पास ही खोलते हैं इसलिए उसके पास माल उधारी पर मिलता हैं।

हमने उनसे बिसी के बारें में पुछा तो उन्होंने बताया कि अगर हम मालवाले आदमी के पास बिसी खेलते हैं तो हमें उधारी का माल मिलेगा, नहीं तो नहीं मिलेगा। क्योंकि इन सबसे उन्हें थोडा फायदा होता हैं और अगर हम उनका पैसा समय पर नहीं दे पायी तो हमारे बिसी से कॉंट लेते थे। इसलिए हम बिसी डालते हैं।

और इस इंटरव्हयू द्वारा हमें एक औरत ने बताया कि, ‘‘पहले तो मैं दूर-दूर तक चलकर या रिक्शा, गाडी से काम पर जाती थी जैसे कि चकाला, अंधेरी ऐसी जगहों पर। अभी मैं नजदीक के जगह पर जाती हूँ क्योंकि मेरे पैर का प्रॉब्लेम हैं। इसलिए मैं चकाला के एअरपोर्ट कॉलेज के बाहर बैठती हूँ, अपना माल बेचती हूँ।’’

क्यों?

हमने उनसे पुछा कि आप यह काम क्यों करते है तो उन्होंने हमें बताया कि हमने यह काम इसलिए चुना कि यह काम हमारा परंपरा से चल रहा हैं। हमारी माँ भी यही काम करती थी। हमारी नानी, दादी, आसपडोस की सारी औरते यहीं काम करती थी।

एक औरत ने यह कहा कि, ''मेरी माँ भी यही काम करती थी और मेरी बडी बहन भी यह काम करती थी इसलिए मैनें भी यही काम चुना।''

कुछ औरतों ने यह कहा कि हम बहुत गरीब होने के कारण हमने यह काम चुना। क्योंकि घर का परिवार बडा होता था और कमानेवाले बहुत कम होते थे तो घर में बहुत गरीबी होती थी। खाने के लिए खाना नहीं मिलता था, पहनने को कपडा नहीं मिलता था, छोटी-मोटी जरूरतें भी पुरी नहीं होती थी, बहुत प्रॉब्लेम रहती थी। इसलिए यह काम चुना। एक औरत ने यह कहा कि, ''मेरा परिवार बहुत बडा था, सब छोटे-छोटे भाई-बहन थे। अचानक माँ की मृत्यू हो गयी तो घर को संभालनेवाला कोई नहीं था, घर में सब भुखे रहते थे, हम बहुत गरीब थे। इसलिए मैंने यह काम चुना।''

कुछ औरतों ने यह कहा कि जब उनकी शादी हो गयी थी तो उनके पती बहुत गरीब थे और डब्बा-डाकन का काम करते थे और बहुत दारू पीते थे, घर में पैसे नहीं देते थे। घर चलाना मुश्किल हो रहा था, घर में भूखा रहना पडता था तो यह काम चुनना पडा। एक औरत ने यह कहा कि, ''उसने यह काम इसलिए चुना क्योंकि उनके पती बहुत दारू पीते थे, उन्हें बहुत मारते थे। जब वह पेट से थी, तभी भी उन्हें मारते थे। उनके पती के मारने के कारण उनके पेट में दो बार बच्चे मर गये। अभी भी उनके पती कुछ काम नहीं करते। पैसे घर में नहीं देते थे इसलिए मुझे यह काम चुनना पडा।''

बहुत सी औरतों ने यह काम इसलिए चुना क्योंकि वह बचपन से पढे-लिखे नहीं थे, गॉव में स्कूल नहीं थे और गॉव में स्कूल होते तो भी माँ-बाप स्कूल नहीं जाने देते थे। एक औरत ने कहा कि, ''वह इसलिए नहीं पढ पायी क्योंकि उनकी पढने की इच्छा नहीं थी क्योंकि गॉव में कोई स्कूल नहीं था, उसका नाम भी नहीं सुना था कि कोई स्कूल भी होती हैं ना ही हमारे माँ-बाप ने हमें बताया और ना ही किसी और ने तो हमें पता नहीं था स्कूल क्या होता हैं। इसलिए पढने की इच्छा नहीं थी और पढे-लिखे नहीं होने के कारण इस काम को चुना।''

और शाम को खाना बनता था। इस काम पर एक दिन भी नहीं जाते तो घर में शाम का खाना नहीं बनता था और छोटी-मोटी जरूरते भी पुरी नहीं होती थी। अगर हम नहीं जायेंगे तो हमारे बच्चे भुखे पेट सोयेंगे। हमारे घर में खाना हमारे काम पर डिपेन्ड हैं। इसलिए हम रोज काम पर जाते हैं। कितनी भी प्रॉब्लेम हो हमें जाना पडता हैं हमारे लिए, हमारे बच्चों के लिए, हमारे परिवार के लिए, इसलिए हम काम करते हैं।

फायदे

जब हम मनीपोतवाली औरतों का इंटरव्हयू ले रहे थे तब हमने उनसे पुछा कि उनके काम के बारे में। साथ ही हमने पुछा कि इस काम से क्या फायदे होते हैं तो उन्होंने बताया कि .....

इस काम से हमें यह फायदा होता हैं कि इससे हमें पैसे मिलते हैं और टाईम-टू-टाईम हम अपना बिशी भरते हैं। छोटी-मोटी जरूरते पूरी होती हैं। साथ में हमें यह भी फायदा होता हैं कि जिस दिन हम काम पर जाते हैं उस दिन हमारे घर में खाना बनता हैं। हमारे पास कम से कम इतने पैसे होते हैं कि हम अपना माल बेचने के लिए खरीद सके।

एक औरत ने यह कहा कि, ''मेरा पती का जो माल का दुकान हैं वहाँ माल बेचता हैं। और इस काम से हमारा घर चलता हैं। बच्चों को पढाने के लिए भी पैसे होते हैं कम से कम और छोटी-मोटी जरूरतों को भी पुरा कर सकते हैं। और हाथ में पैसे होते हैं।''

हमने जब उनसे पुछा कि दिन में कितने पैसे मिलते हैं तो उन्होंने बताया कि इतना पैसा कम से कम शाम का खाना बनता हैं और घर की छोटी-मोटी जरूरते पुरी होती हैं। हमें कम से कम ३०० से ४०० रूपए मिलते हैं जब हमारा महंगा महंगा सामान बिकता हैं। अगर हमारा छोटा-मोटा सामान बिकता हैं जैसे - टिकली, सुई, काजल, कंगी, छोटा आयना तो हमे कम से कम १०० से २०० रूपए मिलते हैं। तब हमें बहुत मुश्किल होता हैं क्योंकि रोज रोज बडे सामान बिकते नहीं।

हमने उनसे पुछा कि इससे घर में क्या-क्या फायदा होता हैं तो उन्होंने बताया कि शाम का खाना बनता हैं, घर की छोटी-मोटी जरूरते पुरी होती हैं, बिशी के रूपए देने होते हैं और किसी का उधारी का पैसा देना होता हैं इससे दे सकते हैं। और साथ ही लाईट बिल, पानी का बिल, राशन का पैसा, बच्चों के टयूशन का फीस यह सब हमारे काम से हो जाता हैं।

हमने उनसे पुछा कि बच्चों को इस काम से क्या फायदा होता हैं, तो उन्होंने बताया कि बच्चों को ज्यादा फायदा तो नहीं होता, हम उनकी सारी जरूरते पुरी नही कर पाते जैसे की नये-नये कपडे, अच्छा टयुशन, अच्छा खाने-पीने के लिये यह सारी चीजें पुरी नहीं कर पाते। लेकिन उनको थोडा फायदा जरूर होता हैं जैसे कि हम जब काम पर जाते हैं तो कुछ औरते हमें पहनने के लिए कपडे देती हैं जिससे हम उनकी थोडी सी जरूरते पुरी कर पाते हैं। एक औरत ने यह कहा कि ''भले ही मैंने अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में नही डाला। फिर भी मेरी बेटी आज

सी.ए. का कोर्स कर रही हैं। वह आज अच्छे से पढ रही हैं और दुसरी ग्रज्युएशन पुरा कर रही हैं, साथ ही कम्प्युटर का कोर्स कर रही हैं। और साथ ही पुकार से जुडी हैं।''

आमदनी/कमाई/गुजारा

हमने पुछा कि आपकी कितनी कमाई होती है तो उन्होंने कहा कि हम कम से कम इतना कमा सकते है कि एक दिन में घर का खाना बना लेते हैं, छोटी-मोटी जरूरते पुरी कर सकते हैं, घर में खाना बन सकता हैं। हम दिन में २००-३०० कमा पाते हैं लेकिन हम बारिश में नहीं जा पाते बारिश कभी भी होती हैं तो हमारा सारा सामान भीग जाता हैं इसलिए ज्यादा कमाई नहीं होती।

हमने पुछा कि २५०-३०० रूपए में आपका गुजारा होता हैं क्या तों उन्होंने कहा कि घर का खाना बनता, छोटी-मोटी जरूरते पुरी होती हैं। किसी से जरूरत पडने पर उधारी लेनी पडती हैं। बिशी में भी पैसे देने होते हैं तो इससे गुजारा होता हैं।

परेशानियॉं/नुकसान

और साथ ही हमने इस काम से जुडी हुई परेशानियॉं पुछी तो उन्होंने हमें बहुत-सी परेशानियॉं बतायी कि धूप में हम चिल्लाते हैं, हमारा पुरा शरीर जैसे कि घुटने बहुत दर्द करते हैं क्योंकि हमें १ रूपए के लिये भी हमारे सर का मालपेटी नीचे उतारना होता हैं । इस काम से हमारी ऑंखो पर बुरा असर होता हैं ।

हम यह काम इतने साल से कर रहे हैं इसलिए आज सभी औरतों को ऑंख की तकलीफ हैं । घुटनों में दर्द हैं, चल नहीं पाती और साथ ही हम जब ऑटोवालों को रूकने के लिए बोलते हैं, तो रूकते नहीं हैं क्योंकि हमारे हाथ में बहुत वजन, सामान रहता हैं । हमें बहुत मुश्किल के बाद ऑटो मिलता हैं । हमें कोई ऑटो में लेता नहीं हैं । हम लोग ज्यादातर बस में सफर नहीं करते हैं क्योंकि हमारे माल के पेटी का और हमारा अलग-अलग टिकट लेना पडता हैं । टिकट लेने के बावजूद भी हम हमारी पेटी अपने गोद में लेते हैं जिससे हमारे पेट में बहुत दर्द होता हैं । बस में इतनी गर्दी होती हैं कि हम चढ नहीं पाते । हमें डर होता हैं कि हम गिर नहीं जाये हमारे माल के साथ, इसलिए हम चलकर आते हैं दूर-दूर से या कभी ऑटो से । बारिश में तो हमें बहुत तकलीफ होती हैं कि हमारा खाना मुश्किल हो जाता हैं । जब हम काम के लिए निकलते समय बारिश होती हैं तो हम एक जगह पर ही खडे हो जाते हैं बारिश जाने तक । इससे हमारा पुरा समय बीत जाता हैं । क्योंकि हमें डर होता हैं कि कहीं हमारा माल भीग न जाए । अगर हम माल बेचते समय बारिश होती हैं तो हम माल की पेटी पर प्लास्टीक डाल देते हैं जिससे हमारा माल बच जाये । लेकिन खुद बारिश में भीगते हैं । हमारे पास कुछ भी नहीं होता हैं कि हम बारिश से भीगने से बच सके । हम छत्री भी नहीं पकड पाते क्योंकि हमारे हाथ में माल की पेटी होती हैं । इसलिए हमें बारिश में भीगना पडता हैं जिसके कारण हम बिमार पडते हैं । बारिश के मौसम के समय हमें बहुत तकलीफ होती हैं, व्यवसाय हमारा अच्छे से नहीं होता, पैसे अच्छे से नहीं मिलते । कभी-कभी भूखा रहना पडता हैं ।

इस तरह से हमें इंटरव्हयू के द्वारा पता चला कि औरतों को क्या परेशानी होती हैं इस व्यवसाय से । फिर भी उन्हें यह व्यवसाय करना होता हैं अपनी जिंदगी बिताने के लिए ।

‘‘एक औरत को बचपन में ही सर पर बहुत गहरी चोट लगी थी, तो उनको टॉंके लगे थे । उन्हें डॉक्टर ने कहा था कि सर पर भारी चीज मत उठाओ ज्यादा, पर मुझे यह काम करना पडता

हैं । तो मुझे सर पर अभी भी दर्द होता हैं । जब मैं सर पर पेटी उठाकर जाती हूँ तो मुझे बहुत दर्द होता हैं ।’’

उम्मीदे/खुशीयॉ/सपने

जब हमने उन औरतों का इंटरव्हयू लिया तो औरतों ने कहा कि हमें अपने आपसे कोई उम्मीद नहीं बस अपने बच्चों से उम्मीदे हैं कि वह अच्छे से पढे-लिखे, आगे बढे और आगे जाकर अपने पैरों पर खडे हो पाये और किसी पर डिपेन्ड ना हो। जैसे हमारी जिंदगी हैं वैसे उनकी ना हो, हम उनसे यही उम्मीद करते हैं।

एक औरत ने यह कहा कि ''मैंने अपनी दोनों बेटियों को पढाया-लिखाया। मेरी बडी बेटी आज अच्छे जॉब पर हैं, उसका ग्रॅज्युएशन हुआ हैं, कम्प्युटर का कोर्स किया हैं। इसलिए आज वह अच्छे जॉब पर जाती हैं और मुझे यह उम्मीद हैं कि वह बहुत आगे जाए। अपनी जिंदगी अच्छे से बिताये और अपने पैरों पर खडी रहे। मेरी दुसरी बेटी की पढाई १२ वी तक हुई हैं, आज वह सोशल वर्कर हैं। अपने आप पर नाज करती हूँ कि मेरी दोनों बेटीयॉ आज अच्छे से जी रही हैं। मुझे बहुत अच्छा लगता हैं कि वह अपने पैरों पर खडी हो गयी हैं, किसी पर डिपेन्ड नहीं हैं। मुझे उनसे यही उम्मीद हैं कि वह अच्छे से जिये।''

हमने जब उनसे पुछा कि आपकी खुशियॉ क्या हैं तो उन्होंने कहा कि बच्चे अच्छे कमाने लगे हैं, खुद की जरूरते पुरी कर लेते हैं, घर की छोटी-मोटी जरूरतें पुरी करते हैं। और हम बिमार पडते हैं तो हमें दवाखाना लेकर जाते हैं। हमारी भावनाओं को समझते हैं, हमें बहुत प्यार करते हैं। एक औरत ने यह कहा कि ''मैं बहुत खुश हूँ कि मेरी बच्ची आज सी.ए. का कोर्स कर रही हैं आर्टिकलशीप। मैंने अपनी बच्ची को अच्छे से प्रायव्हेट स्कूल में नहीं डाला पर उसने अपनी पढाई इतनी अच्छे से की हैं कि आज वह इतना अच्छा कोर्स कर रही हैं। मुझे बहुत खुशी हैं कि मेरी बच्ची आगे बढ रही हैं। मुझे बहुत खुशी होती हैं हमारे यहॉ इतनी सारी लडकियॉ पढी-लिखी हैं, वह आगे बढ रही हैं, बहुत अच्छा लगता हैं उन्हें आगे बढते हुए देखकर।

हमने जब उनसे पुछा कि आपके सपने क्या हैं तो उन्होंने कहा कि हमें अपने आपसे कोई सपने नहीं हैं, हमारे बच्चे अच्छे से पढे-लिखे, उनको अच्छा पती या पत्नी मिले, वह किसी पर डिपेन्ड ना हो, आगे जाकर पढे-लिखे यही हमारे सपने हैं।

निष्कर्ष

हमने २९ औरतों का इंटरव्हयू लिया। हमने इंटरव्हयू में उनसे उनके बचपन के बारें में पुछा, उनकी शादी, पती, उनका व्यवसाय, सपने, उम्मीदे, तकलीफ, नुकसान, फायदे इन सबके बारें में पुछा तो हमें बहुत सी बातें पता चली। उन्होंने उनके बचपन में बहुत सी तकलीफों को सहा हैं, बचपन में उन्होंने बहुत सी जिम्मेदारीयों को समझा और पुरा किया। परिवार बडा होने के कारण कोई भी खुशी नहीं मिली। उन्हें ना बचपन में पढाई का अवसर मिला ना खेलने-कूदने का क्योंकि बचपन में ही उनकी शादी हो गयी थी। बचपन में ही उनपर पती की जिम्मेदारी आ गयी, उन्हें पता नहीं था कि पती क्या होता हैं? संसार क्या होता हैं? घरबार क्या होता है? वह खुद एक बच्ची होने के बावजूद उन्होंने एक बच्चे को जन्म दिया। उनके पती जिनसे उनकी शादी हुई थी, उन्होंने अपना कर्तव्य कभी पुरा नहीं किया। अपनी पत्नीयों के प्रति अपनी कोई जिम्मेदारी पुरी नहीं की। उन्हें एक ऐसी बीवी चाहिए थी जो एक लडका पैदा करे और जो कमाकर उनको पैसे दे। इन औरतों ने फिर भी अपनी जिंदगी को अपने बल पर जिया। वह पढे-लिखे नहीं हैं फिर भी अपने पूर्वजों से चले व्यवसाय के जरिये अपनी जिंदगी बिता रही हैं। यह मनीपोत का व्यवसाय वह बचपन से करती आ रही हैं। यह व्यवसाय वह सुबह से शाम तक गली-गली घुमकर, चिल्लाकर, दूर-दूर जगह पर जाकर काम करती हैं।

इस व्यवसाय के जरीये वह अपने परिवार, अपने बच्चों की देखभाल कर रही हैं। यह व्यवसाय उन्होंने इसलिए चुना क्योंकि वह पढे-लिखे नहीं थे और साथ ही उनके माता-पिता ने यह व्यवसाय गॉव में ही शुरू किया। शादी होते ही यह सब लोग मुंबई जैसे शहर में आ गये। यह व्यवसाय इन्हें दो वक्त की रोटी दिलाती हैं। इसके कारण उनकी छोटी-मोटी जरूरतें पुरी हो रही हैं। वह अपने बच्चों को पढा पा रही हैं लेकिन ये नहीं चाहते उनके बच्चे यह काम करें। उन्हें अपने बच्चों से उम्मीद हैं कि वह पढ-लिखकर कुछ बनेंगे और उन्हें संभालेंगे। उनकी जिंदगी में एक महत्त्वपूर्ण शहर हैं - मुंबई शहर। अगर वह गॉव से मुंबई शहर में नहीं आते, तो शायद आज जो जिंदगी वह जी रही हैं वह जी नहीं पाते। क्योंकि यह व्यवसाय गॉव में ज्यादा नहीं हो पाता और उनके बच्चों को अच्छी परवरीश नहीं मिलती। मुंबई में उनको कमाने का जरिया मिला। शुरूआत में जब वह गॉव से मुंबई आयी तो बहुत मुश्किल होती थी रहने में, खाना नहीं मिलता

था, सोने को छत नहीं था। शुरूआत में वह घने जंगलों में झोपडीयॉं बनाकर रहती थी। कुछ लोगों ने तो सडकों पर और ब्रीज के नीचे रहकर अपनी जिंदगी बितायी हैं।

इस तरह उन्होंने अपनी जिंदगी की शुरूआत की थी लेकिन अब उन्होंने मुंबई शहर में अपनी जगह बना ली हैं। अब वह जगह-जगह नहीं भटकते हैं, अब सबके पास अपना छोटा घर हैं। अब वह चाहते हैं कि उनके बच्चें भविष्य में अच्छा कुछ बने, अपने पैरों पर खडे हो और उन्हें अच्छा जीवनसाथी मिले जो उन्हें हमेशा संभाले। वह नहीं चाहती कि उनके बच्चों को उनकी जैसे जिंदगी बितानी पडे।

पुरे साल में हमने क्या सीखा?

पुरा साल कैसे बीत गया हमें पता ही नहीं चला। पुकार से जुडने के बाद बहुत कुछ सिखने को मिला, बहुत सारी अच्छी-अच्छी बातों के बारें में जानकारी मिली। हमने जब तय किया कि रिसर्च करते हैं तो हमें ग्रुप बनाना था। फिर हमने ग्रुप बनाया। जब हमारा इंटरव्हयू था तब हम सब बहुत डर गये थे। हमें पता ही नहीं था कि इंटरव्हयू में क्या होनेवाला हैं? फिर सारिका, पुनम और आम्रपाली नें हमारा इंटरव्हयू लिया। उन्होंने हमें समझाया कि ग्रुप में कैसे काम करना हैं? फिर हम सिलेक्ट हुये तो हमारा ३ दिन का सण्डे वर्कशॉप हुआ। हमारे ग्रुप में सभी लडकियाँ थी तो हमें ज्यादा बाहर जाने नहीं दिया जाता था। हर सण्डे नया वर्कशॉप हुआ करता था। जैसे कि पहले के ग्रुप ने कैसे काम किया हैं उसके बारें में हमें बताया गया। तो हम भी समझ पा रहे थे कि कैसे काम करना हैं। बहुत सारे वर्कशॉप हैं आर.टी.आय., मॅपिंग, केस स्टडी, इंटरव्हयू, आय. टी.सी., फोटोग्राफी इन सभी वर्कशॉप से हमें बहुत कुछ सिखने मिला। सभी बातों का हमारे रिसर्च में कैसे युज हो सकता हैं हमे बताया, हमें लोगों से इंटरव्हयू कैसे लिया जाता हैं यह बताया, डाटा कलेक्शन कैसे किया जाता हैं हमें अच्छे से समझाया और फोटोग्राफी में कॅमेरा कैसा होना चाहिए, फोटो कैसे निकाला जाता हैं यह बताया।

इन सबसे हमने सिखा कि हमें नये लोगों से कैसे बात करनी चाहिए। हमें ट्रव्हलिंग करना नहीं आता था, अब हम ट्रॅव्हल्स करते हैं। अकेले बात करने पहले डर लगता था, अब अच्छे से बाते कर पाते हैं। और अब डर नहीं लगता।

और हमने ॲनॅलिस के बारें में भी सीखा। ॲनॅलिस क्या हैं, कैसे करते हैं, हमें पता नहीं था। ॲनॅलिस के बारें में वर्कशॉप रखा गया था, जिसमें हमें ॲनॅलिस के बारें में बताया गया। शुरूआत में समझ में नहीं आ रहा था और हमें ॲनॅलिस करने में बहुत मुश्किल हो रही थी। लेकिन तभी भी हमने सुनिल से पुछकर ॲनॅलिस किया। जब जाकर थोडासा सही हुआ। फिर बाद में ॲनॅलिस अच्छी तरह से समझ में आ गया कि ॲनॅलिस कैसे करते हैं। पुरे साल में ॲनॅलिस करते समय समझ में आया कि समाज में औरतों का स्थान क्या हैं।

समाज में औरतों को कमजोर समझा जाता हैं। हमेशा से औरतों को नीचे रखते हैं। वे हमेशा सोचते हैं कि औरत कभी आगे न बढे, वह हमेशा पुरूषों के पीछे रहे। उन्हें लगता था कि

लडकियॉ पढकर क्या करेंगी, उन्हें शादी करनी हैं, पती का घर संभालना हैं । समाज को गलतफहमी हैं कि औरतें कुछ नहीं कर सकती, औरतों का काम सिर्फ घर का काम करना, बच्चों को संभालना ही उनका जीवन हैं। लेकिन समाज औरतों के बारें में गलत सोचता हैं।

हमें रिसर्च के जरिये पता चला कि जो मनीपोतवाली औरते हैं, उन्होंने अपनी जिंदगी अपने बल पर जी हैं और अपने साथ-साथ अपने परिवार को संभाला हैं। अपनी इच्छाओं को पुरा न करते हुए उन्होंने अपने परिवार की इच्छाएँ पुरी की। उनके हर एक जरूरतों को पुरा किया। इन औरतों को किसी का भी सहारा नहीं था। न ही पती का न ही समाज का और न ही परिवार का। लेकिन फिर भी सभी मुश्किलों का सामना करके वह आज अपने मुकाम तक पहूँची हैं। आज यह औरते अपने बच्चों को सब कुछ देना चाहती हैं जो उनको उनके बचपन में नहीं मिला। आज वहीं औरतें अपने बच्चों से उम्मीद करती हैं कि आज उनके बच्चे पढलिखकर आगे बढे और अपने पैरों पर खडे हो। आज हमें इन सारी औरतों से हिंमत तथा प्रेरणा मिल रही हैं कि जिस तरह उन्होंने समाज के बारें में न सोचते हुए उन्होंने अपने और अपने परिवार के बारें में सोचा। उसी तरह हमें भी यह सीख मिली कि हमें भी अपने बारें में सोचना चाहिए न कि समाज के बारें में। जिस तरह यह सभी औरतें मेहनत करके, मुश्किलों का सामना करके आज अपने मुकाम तक पहुँची हैं उसी तरह हमें भी समाज की परवाह किये बिना अपने जीवन में आगे बढने चाहिए। ऐसी बहुत सी बातें इन औरतों से हमें सीखने को मिली।